15·30 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

TWENTY-FOURTH REPORT

SHRI RASHEED MASOOD (Saharanpur) : I beg to move :

"That this House do agree with the Twenty-fourth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 6th May, 1981."

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That this House do agree with the Twenty-fourth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 6th May, 1981."

The motion was adopted.

15·31 hrs.

RESOLUTION RE : PREVENTION OF TARNISHING OF IMAGE OF MAHATAMA GANDHI — *Contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER : How the discussion to be resumed on Shri Tayyab Hussain's Resolution.

Shri Tayyab Hussain.

श्री तैयब हुसैन (फरीदाबाद) : डिप्टी स्पीकर साहब, मैं उस दिन अर्ज कर रहा था कि गांधी स्मृति एक कौमी यादगार है, जिसको देखने के लिए रोजाना हजारों आदमी जाते हैं । मगर उस कौमी यादगार में जो पेंटिंग्ज लगी हुई हैं, उनको देख कर आदमी पर एक अजीब असर पड़ेगा । पहले वे पेंटिंग्ज मिटा दी गई थी, मगर हाल ही में वे फिर से पेंट कर दी गई हैं । गांधी जी ने हिन्दुओं, मुसलमानों और सभी देशवासियों को आपस में मिल कर रहने की तल्कीन की थी, लेकिन वहां पर एक तस्वीर दिखाई गई है कम्युनल रायट्स की । जिस जगह पर गांधी जी ने जामे-शहादत पिया, जो एक कौमी यादगार है, अगर वहां पर कोई बच्चा, या बड़ा भी, कम्यूनल रायट्स की--लोगों के आपस में लड़ने की--तस्वीर देखेगा, तो वह क्या असर ले कर जाएगा ? वहां पर जो और तसवीर हैं ।**

MR. DEPUTY-SPEAKER : Don't you think that you better avoid mentioning these things. You just say that certain obnoxious things are there.

SHRI TAYYAB HUSSAIN : This is a public place and thousands and thousands of people are visiting. I am sorry to say.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I told you even last time. Why should all these things be recorded there ? You can say that there are certain obnoxious things.

SHRI TAYYAB HUSSAIN : I entirely agree with the hon. Deputy Speaker.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Thank you.

श्री तैयब हुसैन : मैं अर्ज करना चाहता हूं कि वहां पर गांधी जी के बारे में जो तस्वीरें लगाई गई हैं, जिनको हजारों आदमी देखते हैं, वे मुनासिब नहीं हैं ।

श्रीमती प्रमिला दंडवते (बम्बई उत्तर मध्य) : गांधी जी की ये फोटोज कहां हैं ?

श्री तैयब हुसैन : गांधी स्मृति, तीस जनवरी मार्ग, पर इस तरह के पेंटिंग्ज हैं । डिप्टी स्पीकर साहब ने सही कहा है कि उनका जिक्र करना जरूरी नहीं है ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : I am not even able to hear these things. That is why I told you.

SHRI TAYYAB HUSSAIN : I agree.

तो उस में यह अर्ज करता हूं आप से कि एक सवाल का जवाब राज्य सभा में दिया गया है 6 मई को जिस का नम्बर है 1503, उस में कहा गया है कि यह गांधी जी की आत्मकथा से लिया गया है । वैसे ताज्जुब होता है और अफसोस की बात है कि जिस ने चुना, चुनने वाले ने इन चीजों को चुना और सवाल के जवाब में आप ने यह चीज मानी है, मैं राज्य सभा का जवाब कोट करता हूं :

"Some of them do appear to be inappropriate to the sanctity of the place."

**Expunged as ordered by the Chair.

यह उस में बताया गया है राज्य सभा के जवाब में लेकिन उस में यह कहा तो गया है, उस के बाद आज तक भी वह वहां मौजूद है । यानी कहने के बाद उस पर अमल क्या हुआ ?

श्रीमती प्रमिला दंडवते : कितने साल से वह फोटो वहां है ?

श्री तैयब हुसेन : यह आप पूछ लीजिएगा जब आप का टर्न आए । मुझे अपने ढंग से कहने दीजिए और मुझे यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि जितनी जनता पार्टी के राज्य में अनगांधियन ऐक्टिटीज हुई है उतनी कभी नहीं हुई जब कि गांधी जी के नाम से यानी उन्हीं के प्राइम-मिनिस्टर थे, उसी स्टेट के लेकिन उस जमाने में जितना हुआ उतना कभी नहीं हुआ ।

मैं यह अर्ज कर रहा था कि यह कहने के बाद भी कि यहां पर वह नहीं रहना चाहिए, उस के बावजूद भी वह वहां है।

एक दूसरे सवाल नम्बर 1423 के जवाब में 6 मई को ही यह बताया गया है, उस का भी मैं जिक्र कर दूं, जो मैंने पिछले फ्राइडे को यहां बात कही, उस जवाब में यह कहा गया है राज्य सभा में कि वहां पर इस तरफ की किताब नहीं बिक रही है। अगर वह कहते कि नहीं बिक रही है और साधारण बात होती तो मैं मान लेता लेकिन वहां न सिर्फ किताबें बिक रही हैं, न सिर्फ इस सदन के मोअज्जिज मेम्बरान वहां से खरीदकर लाए हैं बल्कि खुद होम मिनिस्टर साहब वहां से किताब खरीदकर लाए हैं जैसे कि "हू किल्ड गांधी जी" गांधी वध और मैं, इस तरह की बेशुमार किताबें खुद होम मिनिस्टर साहब वहां से खरीद कर लाए हैं और सवाल के जवाब में मुझे यह लगता है कि उन्होंने गांधी स्मृति से जवाब मांगा होगा, उन्होंने जो जवाब दे दिया, वजीर साहब ने उस को बगैर वेरिफाई किए हुए कि खुद यहां के होम मिनिस्टर साहब वहां से वह किताब खरीद कर ला चुके हैं, और उस में वह चीज है, उन्होंने राज्य सभा में जवाब दे दिया ।

जहां तक पेंटिंग्स का सवाल है, वह पेंटिंग्स और भी अच्छी हो सकती थीं लेकिन उन्हीं को चुनना अच्छी बात नहीं थी क्यों कि जो वहां जा कर देखेगा वह क्या समझेगा ? वह कौमी यादगार है, वहां हजारों लोग जाते हैं । जो आत्मकथा की बात कही गई, आत्मकथा में तो कहीं कोई स्ट्रे इंसीडेंट या इस तरह की कोई बात कही होगी मगर जहां तक मुझे मालूम है उस में यह कहीं नहीं है आत्मकथा में**

इस तरह की बातें आत्मकथा में नहीं हैं । यानी वह जो सवाल के जवाब में दिया गया है, हालांकि मैं उस को भी नहीं समझता कि वह सही तौर पर कहा गया है लेकिन उस के बावजूद भी मिसलीडिंग इन्फार्मेशन दी गई है जिसको कि फौरी तौर पर दूर करने की जरूरत है और वह दूर करना चाहिए क्यों कि इस तरह की चीज उस में कहना कोई अच्छी बात नहीं है ।

ज्यादा वक्त न लेता हुआ मैं यह अर्ज करूंगा कि गांधी जी के साथ जो भी संस्थाएं जुड़ी हुई हैं चाहे गांधी स्मारक संग्रहालय है, चाहे गांधी पीस फाउंडेशन है या गांधी बुकडिपो है जिस की राजघाट पर दुकान है या और भी जो सस्थाएं हैं, जहा गांधी जी का नाम जुड़ा हुया है वहां कम से कम हमें पार्टी लाइन से उठ कर इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि गांधी जी के बारे में या जो भी संस्थाएं गांधी जी के नाम पर चल रही हैं वहां पर गांधी जी जिन बातों को नहीं चाहते थे उन को न किया जाए ताकि हम कम से कम उन की रूह को तो दुनिया में जा

**Expunged as ordered by the Chair.

[श्री तैयब हुसेन]

कर तकलीफ न पहुंचाएं । इस तरह की बात करने की बेहद जरूरत है ।

मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि यह रेजोल्यूशन लाने की जो मेरे दिल में इच्छा हुई और उस के साथ जो मैंने इस को मूव किया उस का एक कारण यह है कि हमारे ऊपर तो गांधी जी का खास तौर से एहसान है। मैं फरीदाबाद कांस्टीच्यूएंसी से आता हूं, गुड़गांव जिले और फरीदाबाद कांस्टीच्यूएंसी से, सन् 47 के जमाने में जब लोग पाकिस्तान को जा रहे थे तो अलवर और भरतपुर रियासत के लोग भी वहां आ कर जमा हो गये थे ।

गांधी जी खुद आए थे । उस वक्त कुछ ऐसे हालात थे कि मजबूर किया जा रहा था जाने के लिए तो गांधी जी खुद 19 दिसम्बर 1947 को, एक घसेड़ा गांव है गुड़गाव में वहां गए थे और उन्होंने कहा था कि आप लोग यहीं रहिए, हर आदमी यहां रहे क्योंकि हिन्दुस्तान सभी का है । हम लोग बिलकुल ही जाना नहीं चाहते थे और गांधी जी के आने के बाद, वह ताकतें जो कि गलत बातें कर रही थीं वह रुकीं और हमारे सारे लोग हिन्दुस्तान में ही रह पाए । मैं समझता हूं उस जमाने में, 1947 में गांधी जी की शायद वह आखिरी पब्लिक मीटिंग हुई थी क्योंकि उसके बाद उनकी शहादत हो गई 30 जनवरी, 1948 को । तो हमारे ऊपर गांधी जी के खास अहसानात हैं । उन्होंने हरएक को यकीन दिलाया था कि तुम्हें मकान और जमीन वगैरह मिलेगी लेकिन वह बात अलग है । अलवर जिले के गोविन्दगढ़ तहसील में मकान नहीं मिला लेकिन गांधी जी दिल्ली से चलकर हमारे इलाके में आए और वहां जाकर उन्होंने कहा कि आप लोग यहीं रहिए । वैसे तो गांधी जी के लिए सभी के दिल में दर्द है और होना भी चाहिए लेकिन हमारे लिए कुछ ज्यादा ही अहमियत थी । उस जमाने में हमारे वालिद साहब यासीन खां साहब और सभी को उन्होंने रोका था और इसीलिए हम लोग जो हिन्दुस्तान में रहना चाहते थे यहां पर रह पाए थे ।

मैं आपका और ज्यादा वक्त न लेकर के यह अर्ज करूंगा कि गांधी जी का नाम लेकर जो बहुत आन्दोलन और दूसरी बातें हो रही हैं वह ठीक नहीं हैं । मेरे पास यह "आसाम ट्रिब्यून" डेटेड 25 अप्रेल, 1980 है जिसको कोट करना चाहूंगा :

"*Gandhian leader's support to Movement* :

Gauhati, April 24, Shri Radhakrishna, Secretary Gandhi Peace Foundation, New Delhi, has assured that he will happily come to Gauhati to support and strengthen the Assam movement.

In reply to yesterday's telegram of Shri Ravindra Upadhyaya, Sarvodaya leader who is undergoing treatment in a Gauhati Nursing Home after an accident, Shri Radhakrishna in his telegram received today said, "We are taking steps help resolve Assam conflict. I fully agree with you that the Assam movement is no longer a problem of Assam. It should be a national issue. I shall await developments and initiatives here before leaving for Gauhati. Shall happily go to Gauhati to support and strengthen Assam movement."

मैं नहीं समझता गांधी जी की तालीमात में से ऐसी भी कोई तालीम है ? आज गांधी जी के नाम से जुड़ी हुई कितनी ही संस्थाएं चल रही हैं, करोड़ों रुपया उनके पास है क्योंकि गांधी जी का मुकद्दस नाम लेकर पैसा भी आसानी से मिल जाता है । मैं अर्ज करूंगा कि इस तरह की जो बहुत सी संस्थायें हैं और जो बहुत सी चीजें हो रही हैं उनके साथ गांधी जी का मुकद्दस नाम न जोड़ा जाए । आज गांधी जी के नाम पर ऐसी सोसायटीज बन गई हैं जिनको बाहर की एजेन्सीज से भी रुपया मिल रहा है । खास तौर से दिल्ली में गांधी बुक डिपो, गांधी पीस फाउंडेशन, गांधी स्मारक निधि—इस तरह की जो संस्थाएं हैं, सरकार को उनकी जांच पड़ताल करनी चाहिये और जब तक जो नुकसान होना था वह हो चुका लेकिन आगे के लिए उसको रोकने की पूरी कोशिश की जाए ।

15.44 hrs.

[SHRI HARINATHA MISRA IN THE CHAIR]

इन अलफाज के साथ मैं पूरे हाउस से दरख्वास्त करूंगा कि मैंने जो एक बहुत सीधा-सादा रेजोल्यूशन रखा है, उसको इत्तफाक राय से पास किया जाए और गवर्नमेन्ट को यह रेकमेंड किया जाये कि इस तरह की जो गलत एक्टिविटीज हो रही हैं उनको रोका जाए ।

MR. CHAIRMAN : Resolution moved :

"This House recommends to the Government that any action by signs, words or publications to tarnish the image of Mahatma Gandhi, the Father of our Nation, be made a cognisable offence."

Now certain hon. Members have given Amendments. They may move their amendments one by one.

SHRI BHIKU RAM JAIN : (Chandni Chowk) : I bg to move : That in the resolution,—

after "any" *insert* ;

"effort, design, scheme, or" (1)

SHRI SUDHIR GIRI (Contai): I beg to move :

That in the resolution,—

after "publications" *insert*—

"not based on facts " (2)

SHRI V. N. GADGIL (Pune) : I beg to move :

That in the resolution,—

add at the end

"and a Commission be appointed to go into the working, finances and activities of such persons, institutions, organisations or bodies who indulge or who have indulged in activities which insult or a tarnish the image of Gandhiji with instructions to report within six months". (3)

SHRI G. L. DOGRA (Jammu) : I beg to move :

That in the resolution,—

add at the end —

"punishable with rigorous imprisonment which may extend to seven years but shall not be less than 6 months and with fine which may extend to Rs. 10,000/-" (4).

SHRI B. R. NAHATA (Mandsaur) : I beg to move :

That in the resolution, —

add at the end—

"and office bearers and officers of any institution, organisation or body of persons constituted for the purpose of preaching propagating Gandhian philosophy and ideology which has indulged or indulges in any activity contrary to the basic concept of Gandhian philosophy or idealism and which tarnishes or is likely to tarnish the image of Gandhi ji shall be liable for prosecution and punishment that may be prescribed."(5)

SHRI KAMAL NATH JHA (Saharsa) I beg to move:

That in the resolution,——

add at the end——

"with retrospective effect without any period of limitation." (6)

MR. CHIARMAN : Shri Bhogendra Jha is absent. Shri Daga.

SHRI MOOL CHAND DAGA : (Pali) I beg to move :

That in the resolution,——

(i) *after* "that any" *insert* "deliberate"

(ii) *after*"action" *insert* "or attempt"

(iii) *after*"cognisable" *insert* "and non-bailable" (8)

SHRI RAM SINGH YADAV (Alwar) I beg to move :

That in the resolution,——

add at the end ——

"punishable with imprisonment which may extend to seven years and with fine which shall not be less then one thousand rupees."

MR. CHAIRMAN : The Resolution and the Amendments are before the House.

SHRI SUDHIR GIRI (Contai) : Mr. Chairman, Sir, I do understand that Mr. Tayyab Hussain has no doubt got great devotion to Mahatma Gandhi. I also share his felllings and his sentiments about Gandhiji. While I share his sentiments I should express my opinion in evaluating the resolution by which he purports to pay homage to Gandhiji.

Sir, the resolution has been worded as follows :—

"Any action by signs words or publ cations to tarnish the image of Mahatma Gandhi, the Father of our Nation be made a cognisable offence."

Now, Sir, in the Oxford Dictionary the meaning of the term "tarnish" has been given this way. I am quoting the relevant portion.

[Shri Sudhir Giri]

'Tarnish means' to lessen or destroy the lustre of' a Image means character of a thing or person as perceived by the public".

Now, if you construe the resolution in the light of the meaning given by the Oxford Dictionary it will be like this:—

"any action by signs words of publications to lessen or destroy the lustre of the character of Mahatma Gandhi the Father of our Nation as perceived by the public, be made a cognisable offence."

Now, Sir, the character of Gandhiji has been perceived by the public. The term public has a very wide cannotation. 'Public' means 'any member of our country or any living person outside' So, whenever any one goes and criticises even Gandhiji policies and view principales then he will also be brought within the purview of this cognisable offence. I cannot agree with this point of view. I say this is wrongly worded. While agreeing with Mr. Hussain on the view which he has expressed, I would like to point out that under Article 19 (1)(a) of our Constitution all citizens shall have the right to freedom of speech and expression. So, if this resolution is translated into action, the fundamental rights of our citizens would be curtailed because every has been given the right to criticise subject however to the limitations imposed under Article 19 (2)(a) of the Constitution in so far as the freedom of speech and expression are concerned. I therefore would like to point out that the spirits of the Resolution does not consist with the fundamental rights. Therefore, this Resolution should not be adopted.

Sir, ours is a democratic society it has had its own democratic character. Those who follow the rules of Almighty also criticise Him. They have got this right. "Gandhiji is a big man no doubt but not above criticisms. Therefore, by putting the resoultion into action, the spirit of the mover of this Resolution will not serve the purpose Sir, I have respect for Gandhiji for his leadership in the imperialist strunggle for his sympathy for the poor, for the down trodden and for the neglected ones. I have very deep regard for him. But while I have regard for his leadership in those days have some difference of opinion with him. He preached that there should be equality in sacrifice and there should be equlity in enjoyment. And following these principles. he devoted his life to the policy of man making. But as he been sucessful ? If Gandhiji's principles had been right then Lord Buddha or any religious leader Could have changed the society could have done away with the poverty of the society. But they have not been able to do so Gandhiji's principles do not hold good now. There are sets of laws which govern the development of societies. But has he follwed those laws ? We follow the principles of Marxism? You know the there are sets of laws which govern the development of society. There was a class struggle and because of the class struggle society developed and the present day society we are living in now is also the result of such class struggle. So I think if I Criticise Gandhiji in respect of his principles and policies in the light of class struggle then I would also be brought within the purview of a cognisable offence. If I criticise his principles and policies, then it will be construed as destroying or lessening the lustre of the character of Gandhiji because Gandhiji had a particular set of principles and if my ideology goes against all those principles. then it will be construed that I am going against the principles of Gandhiji. Then Sir, how shall I exercise my right under article 19 (1) of the Constitution?

I would have been happly if Shri Hussain had brought forward a resolution to curb the monoply power of the ruling partyleaders.

MR. CHAIRMAN: How does Mahatma Gandhi come in the picture ?

AN HON. MEMBER: Let him develop his point..... (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : I am only helping the House to under stand it.

SHRI SUDHIR GIRI : This resolution purports to bring all persons who tarnish the purview of a cognizable offence. I have pointed out that these two words, tarnish and image, have no relevant bearing in this connection. I would have been happier had Shri Hussain brought forward a resolution to curb the monoploy powers of the ruling party leaders. I say so because he is a follower of Gandhism and Gandhiji wanted that there, should be decentralisation of power administrative, political and economic. But has the ruling leaders resorted to these things? No. when the big disciple of Gandhiji Shri Jawaharlal Nehru was not in power, he preached eloquently for socialism but when he came to power, he did not mention a single ward about socialism,. So, I think, Shri Hussain would have done justice to society, to the nation, if he had brought forward a resolution pointing out the difficulties and defects in the pol cies pursued by the so-called Gandh ians. In this context, I would like to point out that one Shri Nirmal Kumar Bose, an eminent Gandhian, who is dead now, has written a book.

MR. CHAIRMAN: I have seen him and had talks with him.

SHRI SUDHIR GIRI: I did not support all that he wrote in his book about Gandhiji. There may be some activities and actions of Gandhiji, which I may feel I require to be criticised. And if I criticise him on those points, I shall be brought within the purview of a cognizable offence. Now, for example, in Jalianwala Bagh there was a massacre. The great poet, Tagore surrendered his knighthood given by the British imperialists, but Gandhiji wanted to suppress the facts. If I point out these things to the people, I will be brought within the purview of this resolutions.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS AND DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI P. VENKATASUBBAIAH): We knew the Communist ideology even before they were the stooges of the British imperialism.... (*Interruptions*) We know how to answer these points. But this is not the way to tarnish the image of the Father of the Nation. I strongly protest.. (*Interruptions*). I can answer you, but do not distort the facts... (*Interruptions*). I will reply to you point by point. We know what role you played in the freedom movement. You did not hesitate to call Subash Chandra Bose** (*Interruptions*)

16 hrs.

I am a freedom fighter.... (*Interruptions*) It is recorded in history. (*Interruptions*). I cannot expect better performance from you because your history is that of betrayal of the freedom struggle. (*Interruptions*)

I have read that Book. I know. I had a contact with that gentleman.

MR. CHAIRMAN: You have already taken about 13 minutes. So, I request you to conclude in a minute or two because there are, I think, 10 members who want to speak so far. We have to conclude it within two hours.

(*Interruptions*)

SHRI SUDHIR GIRI: The hon. Minister had utilized this Floor to put forth his own distorted views.

MR. CHAIRMAN: Forget that.

SHRI SUDHIR GIRI: But I am not saying what the hon. Minister want to say.. The historical facts must be stated. You are keeping these things beyond the knowledge of the people. (*Interruptions*)

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: I know what you had done in the freedom struggle.

SHRI SUDHIR GIRI: The ruling class people are exploiting the people for whom Gandhiji had done a lot. Therefore, I think the resolution is redundant, superflous and unnecessary in view of what I had already pointed out.

16.42 hrs.

[SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI *in the Chair*]

MR. CHAIRMAN: Shri Bhiku Ram Jain.

SHRI BHIKU RAM JAIN (Chandni Chowk): Mr. Chairman, Sir, I was very carefully listening to my friends in connection with a very innocent resolution relating to the Father of the Nation, Mahatma Gandhi. I am really surprised to know that instead of appreciating the resolution, he has brought in politics, difference of opinion and the principle involved in the politics of Mahatam Gandhi and his party. I wish he would have appreciated the spirit of the resolution. Mahatma Gandhi has been acknowledged the tallest man of the era. He was the Father of the Nation declared by one and all unanimously. Now he is talking about the Father of the Nation and his defective policy. It is something which has not been understood by me at all. He has touched something about his character which certainly I would not like to mention. The mover of the resolution has very rightly mentioned that during the past few years some such action has been taken which has warranted this resolution to be brought in by my friend Mr. Tayyab Hussain. I appreciate that after all a resolution of this type has come here. He himself has mentioned that some such step has been taken knowingly or unknowingly by the Government or by some other authority which needs to be undone if it as not to be quoted in a bad manner as has been said by the Deputy Speaker, Shri Tripathiji in the last meeting, Shri Sukhadia and all othres.

What happened about two or three days ago ? A member of Rajya Sabha had raised this point about these paintings at the Birla House, which is now a national monument, which is under the control of Gandhi Samiti. Some very indecent Paintings are there which were once destroyed by one of the ex-members

**Not recorded.

[Shri Bhikhu Ram Jain]

of this House. Surprisingly, after spending another Rs. 6·000 the same paintings have been placed there again. Therefore, it looks as if there is some such sort of a move that they want to tarnish the image of the Father of the Nation in the eyes of posterity. You permit me to say that despite the fact that something has been mentioned by Gandhiji in his own biography in a passing way, does not mean that it is a part of this life; and it does not behove us that we leave things for the posterity in a manner which has been displayed there. Are we telling the people who have to come after us, after 50 or 100 years.**

And it has been stated to Mr. Tayyab Hussain that such things should not be repeated here. But my only anxiety is, inspite of what, was said last time, an effort has been made to say that this is what has been written in the book of Gandhiji and thereofore, it is very rightly placed. If this is the way to we have to depict the life of the Father of the Nation, and if this is how we pay him reverence. I am really surprised how this is being done. I wish to tell you, I wish to take my friends into confidence that if those paintings are not removed by the Government of the authorities who are responsible for it, then I will personally go and remove those paintings within two or three days myself. They are derogatory to his memory and I wonder how they have been allowed to remain there. It is my apprehension that they have been deliberately placed there and it was during she last two or three years, that it was done. Mr. Chairman , I say that.

Mr. Tayyab Hussiain has those photos and much as I would like to say about those photos. I want that they should be placed on the Table, so that some day we will be able to say that we had done something showing Gandhiji in such a position. These are real photographs which were taken about a week back at that very place. I am, therefore, with your permission, placing them on the Table of the House.

MR. CHAIRMAN : This will be examined.

SHRI BHIKU RAM JAIN : You may examine them and then you can place them on the Table.

I wish to quote what Pandit Nehru had said about Gandhiji on his death. I have taken it from the Minute Book. Mr. Jawaharlal Nehru said :

> "I have a sense of utter shame both as an individual and as the head of the Government of India that we should have failed to protect the greatest treasure that we possessed."

And, Sir, this is the respect that we are giving to the greatest treasure that we possessed. Pandit Nehru had also said in the obituary reference to Gandhiji :

> "Today the fact that this mighty person whom we honoured and loved beyond measures has gone because we could not give him adequate protection is shameful for all of us. He was perhaps the greatest symbol of the India of the past, and may I say of the India of the future that we could have had."

These were the remarks made by our Prime Minister in this House in 1948 on the death of the great man of the era and if we just do not see as to how we should keep Mr. Gandhi's things and his books and his remembrances, and the place which has been made so sacred,—it is some thing which we should have seen we have to do some stock taking about it.

It was again Pandit Jawaharlal Nehru who said :—

"Great as his man of God was in his life, he has been great in his death and I have not a shadow of a doubt that by his death he has served the great cause as he served it throughout his life."

Therefore, and very respectfully, Mr. Chairman, I submit, that not only today but it is really good that in 1950 this House has passed an Act, the Emblems and a Names (Prevention of Improper Use)Act, 1950. By this Act the use of the pictures of Mahatama Gandhi, Pandit Nehru and Chatrapati Shivaji, or the Prime Minester of India of the name of Gandhi, Nehru and Chatra Shivaji, except the pictures on calendars was prohibited. It was done to protect the name of the three great persons of this country.

I have one small thing to mention. We have been taken Mahatama Gandhi's name in reverence and there is the Gandhi Peace Foundation and Gandhi Simiti. Definitely we say that we will be able to perpetuate the memory of this great man for posterity. What has happened in actual practice ? Hundreds of institutions have cropped up. Money is coming from foreign countries. It is coming in the name of Service to Poorer Sections of

**Expunged as ordered by the Chair.

society. And shall I tell you what is happening ? I have got a photostat copy of an advertisement appearing in one of the papers of foreign Press and one of the organisations which is working there, they have advertised,

"PEOPLE EAT WHAT HE LEAVES"

The language here is: "People kill rats to earn a small amout of money." In second para it says :

> "They take the rat's food from the nest. Then they and their families eat it. Such is the desperate poverty in one village near Gazipur, India."

Why has such an advertisement appeared? Because they want money from those people. They are telling that our people are not having a simple bread to eat and that they collect grains from the holes of rats and then eat it. And we are tolerating all these things. This is being done by those who are professing the Gandhian philosophy and who are working in Gandhi, Peace Foundation and Nidhi. I, therefore, wish to mention that this advertisement has been inserted by a very important organisation called Oxfam. Oxfam has sent crores of rupees to our organisation here. But nobody knows what the money is being used for. I think, it is used for activities other than Gandhian activities. I wish to mention that if you happen to go there—I wish Mr. Chairman you had gone there—you will find that books are being sold at the Gandhi Book Depot which are contrary to Gandhian philosopy I have got one book here titled 'The men who killed Gandhi'. Another book is

"गांधी वध और मैं"

written by the killer of Gandhi. Another book is written by the brother of the killer of Gandhi. Those books are sold at the Gandhi House. When I asked about it, somebody there told me that they wanted to sell all the literature available in regard to Gandhi whether it was for or against the philosophy of Gandhi.

My submissions that a very appropriate Resolution has come today. It has not been brought to curb any political activity or individual activity. Somebody was quoting Article 19 of the Constitution. It is not against any individual. The Resolution is very clear, innocuous and innocent. I have also given an amendment to this. It means that any effort, design, scheme or action by signs, words or publications to tarnish the image of Mahatma Gandhi be made a cognisable offence. I do not know why it has not been done hitherto we have got to protect our nation's respect, Gandhi mean our nation. Gandhi means India. Gandhi's respect is India's respect. If there is anybody who does not believe in this, he should say so. But to my mind, it would be very difficult to find anybody in this country who can disown Gandhi, his phibosophy and who can disown Gandhi as Father of the Nation, and who would tolerate all these things.

I repeat that if this insult that is being done at the place where Gandhiji was murdered, assassinated, is not undone within a few days I shall persor ally go there and remove it. I shall certainly face all the consequences that may come to me. I cannot tolerate it. My heart burns. It pains me to see in this city of mine, Delhi, such a picture being displayed by people who are responsible to maintain that place and who are doing all sorts of things . If this is not removed, we shall have to think, of some other remedy. But I am sure that this will be looked into by the Government.

श्रीमती प्रभिला दंडवते (बम्बई उत्तर मध्य) : सभापति महोदय, गांधी जी के बारे में जिन लोगों का इस देश के राष्ट्रीय संग्राम से संबंध है, जिनकी ईमानदारी 100 प्रतिशत इस देश के साथ है, ऐसे लोग गांधी जी को हमेशा ही मानते रहेंगे । गांधी जी को सिर्फ अपने देश के ही लोग नहीं, पूरी दुनिया के शोषित लोग अपना आदर्श मानते थे ।

गांधी जी हमारे राष्ट्रपिता हैं । जो रेज्यूलशन उनके बारे में आया है, वह लगता है कि इन्नोसेन्ट है, लेकिन वह इन्नोसेन्ट नहीं है। जो रेज्यूलुशन लाया गया है, उसने गांधी जी की फिलासफी को भी डिफीट कर दिया है । गांधी जी विरोधियों को भी चाहते थे, उनका हृदय परिवर्तन कर के अपने साथ लेना चाहते थे । काग्नीजेबल आफेन्स की बात उनके मन में नहीं होती थी ।

इस प्रकार का रेज्यूलूशन लाकर गलती हो गई है । मैं समझती हूं कि रेज्यूलुशन लाने वाले का मन भी आदर से भरा हुआ है । लेकिन दो तीन बातें मैं कहना चाहती हूं । आज की दुनिया की ह्वावत हर क्षेत्र में हो रही है, आज गांधी जी की और

[श्रीमती प्रमिला दंडवते]

जाने वाले, जिन्होंने गांधी जी से नफरत की थी, ऐसे पार्टी के लोग भी गांधी जी का नाम लेते हैं क्योंकि आज दुनिया के सामने जो सवाल हैं, उन्हें हल करने की ताकत गांधी जी की फिलासफी में है और उनकी शिक्षा में थी। गांधी जी के किसी चित्र के नीचे क्या लिखा है, हम उससे अनुमान लगा सकते हैं कि उसके पीछे क्या भावना है। यह बात हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। किसी चित्र में गौतम बुद्ध को आम्रपाली के साथ दिखा देने से गौतम बुद्ध का नाम खत्म नहीं हो जाता है। गौतम बुद्ध के एक वेश्या के पास जाने के संबंध में उस जमाने में कई लोगों ने उनकी आलोचना की थी।

मुझे लगता है कि यह चित्र वगैरह सब एक बहाना है। गांधी पीस फाउन्डेशन और गांधी स्मृति के लोगों ने श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन को समर्थन दिया था, यह बात सही है। मुझे जो कहानियां बताई गई हैं, उनसे मुझे मालूम हुआ है कि हमारे होम मिनिस्टर साहब वहां गए और उन्होंने कहा कि मुझे गाडसे की किताब चाहिए। वहां पर जो एक नौकर है, उसने कहा कि यह किताब हमारे यहां नहीं बेची जाती है। होम मिनिस्टर साहब ने कहा कि बेची जाती है, मुझे चाहिए। उन्हें वहां से यह किताब नहीं दी गई, तो उन्होंने किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बाहर से किताब मंगवाई और इस बात पर जबरदस्ती की कि उन्हें वहां से रसीद दी जाए। (व्यवधान)

SHRI BHIKU RAM JAIN: It is not correct. I have also purchased books from there.

श्रीमती प्रमिला दंडवते: गांधीजी ने 1942 में क्रान्ति लाकर हमारे देश को आजाद कराया और हमारे देश में आजादी के लिए उमंग पैदा की। मगर गांधीजी के तप श्चर्या से फायदा उठाने वाले लोगों ने 42वां संशोधन ला कर इस देश को एक बार फिर गुलाम करने की कोशिश की। मैं आप को याद दिलाना चाहती हूं कि आपातकाल में हम लोगों से कहते थे कि उन्हें गांधीजी को याद रखना चाहिए, क्योंकि गांधीजी ने कहा था कि अन्याय करने वालों की तुलना में अन्याय सहने वाले अन्याय के लिए ज्यादा जिम्मेदार हैं, इस लिए अन्याय के खिलाफ लड़ो, और ब्रिटिश सरकार के जाने के बाद आगे चल कर अगर कभी अपनी सरकार भी अन्याय करती है, तो उसके खिलाफ भी निर्भय हो कर लड़ो। आपातकाल में जो छोटे-छोटे बच्चे गांधी जी के फोटो का बैज लगा कर घूमते थे, उन्हें पकड़ कर जेल में डाल दिया जाता था।

मेरी एक फ्रेंड ने पूना में चित्रों की एक एग्जिहिबिशन लगाई थी। उसमें ऐसा कोई भी अनुचित चित्र नहीं था, जिसका जिक्र अभी माननीय सदस्य ने किया है। उसमें गांधीजी से संबंधित डांडी मार्च आदि ऐतिहासिक घटनाओं के चित्र थे। लेकिन उस वक्त एग्जिहिबिशन को बैन कर दिया गया। श्री एस. बी. चव्हाण उस वक्त मुख्य मन्त्री थे। उन्होंने उस एग्जिहिबिशन को बैन कर दिया और उस महिला को गिरफ्तार कराया। इसका कारण यह था कि चूंकि अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए गांधी जी की शिक्षा काम में आती है, इस लिए गांधी जी की शिक्षा और चित्रों आदि पर बैन लागा देने से अन्याय के विरुद्ध आवाज नहीं उठायेंगे।

आज भी लोगों को निर्भय होने की आवश्यकता है सैन्ट्रल हाल में और अपने घरों में बातें करते हैं कि जो कुछ हो रहा है हम उसका विरोध करते हैं। इस तरह से बॉडिड लेबर बन कर नहीं रहना चाहिए। आज देश के लोकतन्त्र को खतरा है। इस लिए अगर गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करना है, तो आज जो हालत चल रही है, उसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। आज देश भर में स्मगलरों और गुन्डों का राज्य चल रहा है। उनके खिलाफ कौन लड़ेगा? अगर देश को बचाना है, तो गांधीजी की शिक्षा के अनुसार निर्भय बनो। यह रेजोलूशन लाने के बजाय निर्भय बनो और लोकतंत्र के लिए खड़े हो जाओ और इस सदन में जो कुछ चल रहा है, वह खत्म करो, यह मेरी प्रार्थना है। केवल गांधीजी का नाम ले कर कुछ नहीं होता है।

मुझे पता चला है कि यह हुक्म निकाला गया है कि गांधी स्मृति के द्वारा जयप्रकाश नारायण की किताबें न बेची जाएं, "प्रिजन डायरी" न बेची जाए । यह सरकार श्री जयप्रकाश नारायण के सम्बन्ध में कमेटी बनाती है, प्रधान मंत्री उसकी चेयरमैन बनती हैं और श्री जयप्रकाश नारायण की स्मृति में स्टैम्प्स जारी करती है । दुनिया जानती है कि इस देश में फिर एक बार लोकतंत्र लाने वाले और जनता के मन में उमंग पैदा करने वाले श्री जयप्रकाश नारायण थे । यह आदेश दिया जाता है कि श्री जयप्रकाश नारायण का लिट्रेचर न बेचा जाए । उनके नेतृत्व को समर्थन देने वाले और उनकी मदद करने वाली जो संस्थाएं हैं, कुछ न कुछ बहाना करके उनके खिलाफ सवाल उठाए जाते हैं । इसीलिए आज यह प्रस्ताव आया है । (व्यवधान)

आचार्य भगवान देव : यह गलतबयानी कर रही हैं ।

श्रीमती प्रमिला दंडवते : कांग्रेस में जो लोग बैठे हुए हैं, अगर वे सच्चे मानों में गांधीजी का सम्मान करना चाहते हैं, तो वे इस रेजोल्यूशन का विरोध करें और स्वतंत्रता के लिए अपनी सरकार के खिलाफ भी लड़ने के लिए तैयार रहें ।

PROF. N. G. RANGA (Guntur) : Mr. Chairman, Sir, I am generally in favour of the spirit of this Resolution.

Sir, I am glad this question has been brought up here for discussion in the House. I have to plead guilty before the House in regard to one matter. I happened to be one of the members of the executive of the Gandhi Smriti which used to be at one time Birla Bhavan. Later on it was consecrated to the nation after having paid compensation to the Birla family. We had taken it over for the nation. But when we took it over, we found in a small mandir there a number of pictures already painted there. We did not wish to get them removed because we felt that some people might take some objection. But there were a few—one or two—small pictures which need not have been there, which could easily and conveniently be removed, but then somebody or the other has got to take the decision and it needs a lot of courage from the political point of view. Now, I would like the Government to get those pictures removed properly. It should be carefully examined to see whether two or three of those things can possibly be removed.

Secondly, the Government itself has to give an explanation to the whole nation, wheather it is this Government or the Janta Government or the previous Government, for having, failed to raise Mahatma Gandhi's statue and instal it in this Capital over all these years. This question came up several times for discussion when Panditji was alive and later on also. When Morarjibhai was there as Prime Minister, I took it up with him and he asked me to be happy at the news that they had at long last decided upon the kind of design for Mahatma Gandhi's statue and the kind of statue by which Mahatma Gandhi should be shown as standing as he would appear to us now, when he was moving in the Dandi March or when he was praying or when he was spinning and so on. He told me that they took the decision, they chose the architect and very soon the statue would be raised. Till now no final decision seems to have been taken and I do not know how much longer this Government would take before the statute comes to be erected.

Indeed, there was some controversy over the place where the statue has to be raised. After a long time, especially during those days when we were trying to celebrate Gandhiji's Birth Centenary we insisted that by the time the Centenary year was over, the statue should be erected. But that is not done. The place should be chosen and I think the place has, at long last, come to be chosen. Just before the India Gate arch where there used to be King George's statue, in that place or somewhere nearby they have chosen the place. I would like some definite information to be given by Government to this House if it is possible today, otherwise some time later.

All over India there are statues of Mahatma Gandhi. I am sure there are more than a lakh statues. In many towns, each mohalla was raising one statue or the other and when they raised the statues, quite a number of them needed repairs. People were keen on raising them and afterwards they are not so very keen on maintaining them. But that is the most important thing. Something has got to be done. Some kind of an instruction has to go from here in the form of an advice to the State Governments in order to see that wherever Mahatma Gandhi's statue is raised, either a panchayat Board there or panchayat samiti or zila parishad, some municipal authority or civic authority, should be charged with the responsibility of maintaining the statues in

[Prof. N. G. Ranga]

proper condition, and also in seeing to it that on two or three crucial days i.e. on 2nd October, the day on which Mahatma Gandhi was born and on 30th January, his *swargarohan* day, the statue should be propety cleaned, garlanded and prayer should be held near the pedestal.

I would like to make one point i.e. the obsence way of dealing with Mahatma Gandhi has to be given some consideration by us. There were some books also. They have written all kinds of things about Mahatma Gandhi.

Mahatma Gandhi, during his life, made experiments in various aspects of our social life, social life of Indians, social life of human beings. There are certain experiments, about which it would be good for us to tell our children, help them to emulate the achievement made by Mahatma Gandhi and the results achieved. Those should be placed before the children. There are other experiments where no results were a achieved. They proved to be abortive. Such aspects of life and experiments need not be propagated. I do not mean to say that Government should propagagte but Government should certainly see to it that such publications, such photographs which are being placed before the public should be properly examined and Government should be in a position to come to some decision as to which of them should be allowed to be propagated and which of them should not be allowed. Just as you do not allow little children of formative age below adolescence and during adolescence to go and see such and such pictures, so also these are certain aspects, certain photographs about Mahatma Gandhi. Those shots were taken at that time and some were not taken at all but were imagined by some artists. We should see to it that those things are not placed at the disposal of the general public as a whole.

Can we make it a cognisable offence? It is a very serious matter. Government will have to give some thought to it. I do not think it would be possible for the Government to say here and now whether they are going to make all these things a cognisable offence so as to punish such artists and other people. They have to give serious thought to various aspects of the manner in which we should allow these artists, photographers writers and other people to present their conception of Mahatma Gandhi before the public in our country.

I am sure there cannot be two opinions in this House, from all sides of the House, as to how Mahatma Gandhi has come to be venerated by us, should continue to be venerated by our people and his life sketch and teachings should be placed before the comig generation like that of Buddha, like that of Shri Rama, to be emulated, to be held in great veneration and to be treated as an example for men and women.

His treatment of women is something most extraordinary. We know that he made experiments in that direction. He started like any other Indian husband in the usual unhappy manner of treating the woman as something less than man and then ended by treating the women as not only equal to man but also to treat her almost as goddess.

In this way, in regard to children also, just like Mahatma Ganhi, United Nations has been thinking of observing the children day'. This year it is disabled people's day. Earlier it was a day for the lepers. another for women and so on. It was Mahatma Gandhi who led the war in all these directions.

He was the man who nursed a leper. Only the other day we had a discussion also in this House and our friends were asking that special facilities, financial and other facilities should be provided for all those institutions which are catering to and which are ministering to the needs of our lepers. It was Mahatma Gandhi who led the way. Many of us get frightened with the very idea of a leper. But it was Mahatma Gandhi who went and nursed a leper and led the way to all of us.

In so many directions Buddha wanted people to move, in a humane manner. Mahatma Gandhi actually moved and led the way for people and showed how not only human beings are to be respected, loved and cherished but animals also are to be respected and cherished. Even vegetation should be treated with great respect. In all these directions, Mahatma Gandhi was unique.

The Indian tradition itself has been unique in these directions. Mahatma Gandhi put life into all these things and made us all feel one with nature, one with everything that is there, whether animate or inanimate. He was once asked, whether he believed that stones had life. He said, "Yes, why not ? There is life in everything." And that is also apart of our own tradition. Our men and women at home do not allow our children to it earth in a contemptous manner. They ask them to apologise to Mother

Earth and, respect Mother Earth. In this manner, Mahatma Gandhi has held before us the noblest possible ideals of life and it is for that we have to cherish Mahatma Gandhi and we will continue to cherish.

I sincerely hope that the Government would take earliest possible steps in order to raise a statue here and would also give necessary advice to all the civic organisations all over the country to cherish Mahatma Gandhi's statues and also to propagate his ideals.

SHRI JAGPAL SINGH (Hardwar): Mr. Chairman, Sir, I oppose the wording of the Resolution :

"This House recommends to the Government that any action by signs, words or publications to tarnish the image of Mahatma Gandhi, the Father of the Nation, be made a cognisable offence."

सभापति महोदय, मैं इस रिजोल्यूशन के सैंस और कान्सेपशन पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । मैं कॉग्निजबल आफेंस के मामले में खास तौर से शुरू में ही कहना चाहता हूं कि इस रिजोल्यूशन के विरोध करने का मक्सद यह नहीं कि मैं महात्मा गांधी की इज्जत नहीं करता हूं या उनका विरोध करता हूं, बल्कि सिद्धान्ततः देश की आजादी की लड़ाई में एक तरफ महात्मा गांधी जी ने अगर इस देश की आजादी को नेतृत्व दिया था तो दूसरी तरफ इस देश को आजादी के लिए सैंकड़ों-हजारों नौजवानों किसान-मजदूर और हमारे भाइयों और बहनों के पतियों ने बलिदान दिया था । यह बात सही है कि महात्मा गांधी ने नेतृत्व दिया था । कल किसी भी नेता के बारे में इस हाउस में मामला उठा सकते हैं, चाहे वह पंडित जवाहर लाल नेहरू हो, श्रीमती इंदिरा गांधी के बारे में हो या किसी और गांधी के बारे में हो, स्व. संजय गांधी के बारे में हो या श्री राजीव गांधी के बारे में हो, किसी भी गांधी के बारे हो सकता है। मैं यह कहना चाहता हूं कि यह डिस्क्रीमिनेटरी पालिसी नहीं होनी चाहिए कि एक-एक देश के नेताओं के बारे में रिजल्यूशन आए और दूसरे नेताओं के बारे में छूट हो और उनके बारे में जो चाहे करें ।

एक बार गांधी जी ने कहा था कि पाप से नफरत करनी चाहिए, पापी से नहीं । उनके पूरे जीवन का जो उद्देश्य था वह किसी से बदला लेना नहीं था । मैं खास तौर से . . . (व्यवधान) . . . मैं इस मामले पर इतना कहना चाहता हूं कि क्योंकि कान्स्टीचूशन में हमारे मुल्क में लोगों को आजादी है, डिफ्रेंट ओपिनियन रखने की, आलोचना करने की । इस रिजोल्यूशन का कल गलत इस्तेमाल हो सकता है, जिसमें हमारी जम्हूरियत को खतरा पहुंच सकता है । मान लीजिए, कल मैं ही या कोई भी आदमी किसी विचारधारा को मानने वाला हो, वह गांधी जी की विचारधारा का समर्थन नहीं करता है ।

सभापति महोदय: विचारधारा की बात नहीं है, इमेज की बात है ।

श्री जगपाल सिंह : मैं पब्लिकेशन्स और वर्ड के बारे में कहना चाहता हूं, क्योंकि राउन्ड टेबिल कान्फ्रेंस में बाबा साहिब अम्बेडकर और गांधी जी दोनों गए थे । दोनों की ओपिनियन बिल्कुल डिफ्रेंट थी । गांधी जी कुछ कहें और बाबा साहिब अम्बेडकर कुछ कहें और जब लोग बाबा साहिब अम्बेडकर के बारे में बोलते हैं तो उसमें गांधी जी की चर्चा जरूर आती है ।

सभापति महोदय : जगपाल सिंह जी, इमेज और बातचीत दोनों अलग बातें हैं ।

श्री जगपाल सिंह : मैं यह कहना चाहता हूं कि इस की लैंग्वेज बड़ी वाइड और वेग है । आप उन की मूर्ति के प्रति या किसी प्रकार के अपशब्दों के सम्बन्ध में प्रस्ताव को संशोधित कीजिए, लेकिन जो इस प्रस्ताव में दिया गया है उन शब्दों को निकालिये । आप जानते हैं--हिन्दुस्तान में कम्यूनिस्ट पार्टी है, अन्य क्रान्तिकारी हैं, जो गांधी जी की विचारधारा से सहमत नहीं हैं । गांधी जी स्वयं कहते थे कि मेरा कोई "वाद" नहीं है, मैंने तो दुनिया से सीखा है । यहां तक कि गांधी जी ने स्वयं, जब कांग्रेस पार्टी कुछ दिन शासन में रह चुकी थी, तो कहा था कि ये लोग मेरी विचारधारा के खिलाफ चल रहे हैं, जो मुझे एक झाड़ू देने वाले के बराबर भी नहीं समझते हैं । उस समय का शासन गांधी जी के

[श्री जगपाल सिंह]

विचारधारा के खिलाफ काम कर रहा था । गांधी जी चाहते थे कि देहात की गरीब जनता के हित में काम किया जाए, लेकिन कांग्रेस पार्टी उन को उस विचारधारा पर नहीं चली । उसी पार्टी के सदस्य आज इस प्रस्ताव को ले कर यहां आए हैं, जब कि गांधी जी की विचारधारा के खिलाफ चलने वाली इस सरकार को सत्ता में रहने का भी अधिकार नहीं है । जो हमेशा गांधी जी के नाम पर जनता से वोट लेते रहे, लेकिन गांधी जी के सिद्धान्तों के खिलाफ चलते रहे, जिन्होंने गांधी जी के सिद्धान्तों को ही तिलांजलि दे दी . .

एक माननीय सदस्य : चौ. चरण सिंह ने दी है ।

श्री जगपाल सिंह : चौ. चरण सिंह के बराबर गांधी जी को आइडियालाजी को मानने वाला दूसरा नहीं हो सकता । वे आज भी देहात के प्रश्न को लेकर चल रहे हैं ।

इन शब्दों के साथ में इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं और इस लिए विरोध करता हूं कि इस के पास कर देने से कहीं किसी प्रकार का डिस्क्रीमिनेशन पैदा न हो जाए । गांधी जी की वो इमेज है, जो श्रद्धा और सम्मान उन के प्रति हमारे दिल में है, इस प्रस्ताव के पास करने के बाद कहीं कोई सिर फिरा आदमी कोई गलत कदम न उठा दे । दुनिया में गांधी जी के अलावा और भी बड़े-बड़े नेता हुए हैं, यद्यपि उन के विचार गांधी जी से मिलते नहीं थे, लेकिन वे गांधी जी की अपार इज्जत करते थे । इस लिए सब के साथ एक सा व्यवहार होना चाहिए । इसीलिए मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

प्रो. नारायण चन्द पराशर (हमीरपुर) : सभापति जी, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन हकरता हूं और श्री तैयब हुसैन जी की सराहना करता हूं । उन्होंने इस प्रस्ताव को इस समय यहां ला कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर इस सदन और राष्ट्र का ध्यान मिलाने की कोशिश की है ।

सवाल यह नहीं है कि इस प्रस्ताव के पास हो जाने से या इस प्रस्ताव पर इस सदन को मोहर लग जाने से इस में वर्जित कुचेष्टायें कमनिजिबिल आफेंस हो जायेंगी । यह तो एक भावना है जो इस प्रस्ताव के द्वारा सरकार को दी जा रही है । आप लोग जानते हैं कि जब कोई कानून बनेगा या इस को आफेन्स में शामिल किया जायगा तो यह "ओपन-टू-दि-कोर्ट्स" होगा। मैं भी यही बात कहता हूं--तब फिर इस में घबराने की क्या बात है । हमारे विरोध पक्ष के भाई कुछ इस तरह की आशंका व्यक्त कर रहे हैं कि इस पक्ष की ओर से कोई ऐसी बात लाई जा रही है या श्री तैयब हुसैन की ओर से ऐसी बात लाई जा रही है जिस में विरोध पक्ष को खत्म करने के लिए कोई कार्यवाही हो रही हो । इस में ऐसी कोई बात नहीं है । वास्तविकता यह है कि कुछ संस्थाओं द्वारा ऐसे काम किये जा रहे हैं, उन की गतिविधियां कुछ इस प्रकार की है जिन पर आपत्ति है। आप जानते हैं कि हमारे राष्ट्र की कुछ मान्यतायें हैं, कुछ सिद्धान्त हैं, कुछ आदर्श हैं जिन को ले कर हमारी सरकार चल रही है । यह ठीक है कि बहुत से लोगों को गांधी जी की विचारधारा से इख्तिलाफ रहा है, लेकिन उसके बावजूद भी वे दिल से उनका सम्मान करते थे, इसलिए कि गांधी जी ने सारे राष्ट्र को अहिंसा के रास्ते पर ला कर खड़ा कर दिया था और उस समय एक ऐसे राज्य से टक्कर ली जिस का सात-समुद्र पार राज्य था जिस के शासन काल में सूर्य अस्त होता था। ऐसे व्यक्ति के प्रति कुछ गलत भावना पनपे, जिसको हम राष्ट्रपिता मानते हैं, उसकी छवि को धूमिल किया जाय--यह उचित नहीं है । हमारे देश में ऐसे अनेक क्रान्तिकारी हुए हैं जिन्होंने गांधी जी की विचारधारा का खण्डन किया था, लेकिन वे भी उन के सामने नतमस्तक हुए हैं । उन्होंने भी माना है कि महात्मा गांधी एक ऐसे राष्ट्रपुरुष हैं जो सारे राष्ट्र को आगे ले जा सकते हैं । उस व्यक्ति के प्रति कम से कम हमें श्रद्धा की बात करनी चाहिये। बड़े खेद की बात है, जैसे कि मैं देख रहा हूं, इस किताब में--द मेन हू किल्ड गांधी--में नाथू राम गोडसे को उक्तियां दी गयी हैं । इसको एक उचित

यह है जो कि मैं चेप्टर दो में से पढ़ कर सुनाता हूं —

"There was no legal machinery by which (Gandhi) could be brought to book....I felt that (he) should not be allowed t meet a natural death."

ये बातें जिनका ऐसी किताबों के द्वारा प्रचार किया जा रहा है। इसका मतलब यह है कि महात्मा गांधी को अपना जीवन पूरा करने की इजाजत नहीं होनी चाहिए, उनकी प्राकृतिक मत्यु नहीं होनी चाहिए, उनकी हत्या होनी चाहिए। अगर इस तरह की किताबों में इस तरह की उक्तियां हों और उन्हें गांधी स्मारक निधि द्वारा चलाये जा रहे पुस्तकालयों में रखा जाए और उसके बिक्री केन्द्रों द्वारा बेचा जाए तो यह देश के लिए बहुत अहित कर होगा। इस किताब के एक दूसरे चेप्टर में गोडसे की एक बात और कही गयी है जिसे मैं पढ़ कर सुना देना हूं —

"As regards non-violence, it was absurd to expect 40 crores of people to regulate their lives on such a lofty plane."

अहिंसा हमारे राष्ट्र की एक नीति है, एक चिंतन है, एक परम्परा है, एक आधार है। अगर इसकी जड़ खोदने के लिए कोई प्रयत्न करे और गांधी जी के नाम से करे तो आपको यह समझना चाहिए कि इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

जिस जड़ को गांधी जी ने मेहनत से सींचा, अपने खून-पसीने से पनपाया उस जड़ पर इन चीजों का क्या प्रभाव पड़ेगा, इस को आपको समझना चाहिए। इस प्रस्ताव में यह जो बात कही गयी है कि राष्ट्र के चिह्नों और राष्ट्र पिता का जो अपमान करे उसके बारे में जरूर कार्यवाही होनी चाहिए। अगर सरकार यह व्यवस्था नहीं करेगी तो हमारी जो ये परम्पराएं हैं, या थातियां हैं उनको तोड़ दिया जाएगा। इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है कि उन्हीं के नाम से बनी संस्था में ऐसी किताब बिकें। हम इस प्रस्ताव के द्वारा किसी विचारधारा को खत्म नहीं करना चाहते हैं। (व्यवधान) हमारे किसी की विचारधारा से मतभेद हो सकते हैं लेकिन हम जयप्रकाश जी आदर करते हैं। जयप्रकाश नारायण स्मारक समिति की स्वयं हमारी प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी अध्यक्षा हैं। वह उनका आदर करती हैं तभी तो वे उसकी अध्यक्षा हैं। (व्यवधान) आपकी तरफ से यह बात आई थी, मिसिज दंडवते ने यह कहा था। अगर ऐसी बात होती तो इन्दिरा जी उसका अध्यक्ष होना पसंद नहीं करतीं। इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे उनका आदर करती हैं।

इसके द्वारा हम यही चाहते हैं कि राष्ट्र का जो चिंतन है, जो परम्पराएं हैं, अहिंसा का जो वातावरण है जिसको गांधी जी ने पूरी मेहनत के साथ देश में बनाया था उस सब को खत्म करने की किसी को भी इजाजत नहीं होनी चाहिए। बहुत सी ऐसी संस्थाएं हैं जो देश-विदेश से धन ले कर और गांधी जी का नाम ले कर इस तरह की किताबों का, साहित्य का, ऐसे चित्रों का, झांकियों का प्रदर्शन करती हैं। जो भी इस प्रकार का प्रदर्शन करती हैं, या इस प्रकार का साहित्य सृजित या विक्रय प्रकार की किताबों का, साहित्य का, ऐसे में बढ़ती हैं तो उनको इसकी इजाजत नहीं होनी चाहिए। इससे देश का नुकसान हो सकता है।

इसलिए मैं सदन के सदस्यों से अपील करूंगा कि वे इस की भावना को समझें और हैदर हुसैन जी के प्रस्ताव को स्वीकार करें और मन से यह बात स्वीकार करें कि गांधी जी का रास्ता ही सही है, वही ठीक रास्ता है; अहिंसा का रास्ता ही ठीक है। इन शब्दों के साथ मैं इसका समर्थन करता हूं।

*SHRI ERA MOHAN (Coimbatore): Mr Chairman, Sir, or behalf of my party, the Dravida Munnetrca, Kazhagm I rise to make a few suggestions on the Resolution of Shri Tayyab Hussain, which recommends to the Government through the House that any action by signs, words or publications to tarnish the image of Mahatma Gandhi, the Father of our Nation be made a cognisable offence. In his introductory speech, my hon. friend Shri Tayyab Hussain gave a graphic description of the intentions that

*The original speech was delivered in Tamil.

[Shri Era Mohan]

goaded him to bring forward this Resolution. The hon. Member Prof. Ranga andothers, who preceded me, very clearly referred to the prevalent situation in the country and also emphasised the imperative need for the Government to implement the Resolution before the House.

Though the State Governments have banned the use of names of national leaders in advertisements, yet in many parts of the country you can find Mahatma Gandhi's name being displayed in shops and in hotels and Mahatma Gandhi has also become the brand name of beedi, tobacco etc. The Government should take steps to end this kind of misuse of names of our national leaders. Mahatma Gandhi, the father of our Nation, Pandit Nehru, Subhash Chandra Bose and those leaders of Southern India who were in the forefront of freedom struggle like Rajaji, Thanthai Periyar, the great pioneer in shipping Vaa. Vo. Chidambaram Pillai should be remembered for their role in our Independence Movemnent. The posterity should cherish their names or their contribution in our freedom struggle, and not by using their names for personal benefits. If efforts to exploit such venerable names for 'partisan considerations are continued, then it will undermine the nation's prestige. The Government should take immediate steps to curb such anti-national activities. In fact, the Government are duty-bound to protect the honour of such great men of our nation.

Recently, there has been heated discussion about Sir Attenborogh's film on the life of Mahatma Gandhi. I do not join the ranks of disse nters or supporters. If the life of Mahatma Gandhi is filmed properly, then entire world will come to know of Mahatma Gandhi's contribution to the liberation of colonial countries. If it is filmed, without proper appreciation of the events and without proper understanding of the philosophy of Mahatma Gandhi, then it will naturally create misconceptions in the minds of many in the world. We should safeguard our nation's dignity in this matter. From what I have read in the newspapers and from what I heard from these who witnessed the simulated funeral procession of Mahatma Gandhi, which was filmed recently in Vijay Chowk, I think the participants in this scene did not evoke the spirit of loss that the nation suffered in the death of the mightiest of man of the earth. On the other hand, they were laughing, smiling and cutting jokes among themselves. It looked as though they were gay-walkers. Naturally, this depicition of the last scene of Mahatmaji's life will not be understood by the audience in its proper spirit. The Government of India should scrutinise such scenes of the film carefully and before permission is given for universal exhibition of this film, appropriate steps should be taken for exhibiting the life of Mahatma Gandhi in its proper sense.

As I was saying initially, the names of Mahatma Gandhi and other national leaders are being used for advertisements in shops and in hotels and they are used also for brand names of products. In addition, of late, even political parties, which are to be organised on well-laid out principles and programmes, carry the names of national leaders. I do not know about other states. But in Tamil Nadu, in the name of Mahatma Gandhi and Kamaraj there is a political party. In the name of Kamaraj alone there is a political party. Arignar Anna has become the prefix of a political party. Yesterday, my hon. colleage, Shri Subramania Swamy was talking about. Anna D.M.K. and Amma D.M.K. He does not know the dravidian movement in Tamil Nadu. Anna was the founder-Member of D.M.K. He has left the legacy of his ideals only in D.M.K. But another party appropriates merely the name of Anna and not his ideals.

SHRI SUNIL MAITRA (Calcutta North East) : Congress (I) stands for whom ?

SHRI ERA MOHAN : That is different. In Tamil Nadu they are directly using the names of national leaders for personal benefits. Mahatma Gandhi's name or Kamarji's name or Anna's name should not be used for a political party. The Government should take effective steps to ensure that the names of venerable leaders of the nation are not belittled or denigrated in this manner either by sign or by word or by publication. With these words Iresume my seat.

MR CHAIRMAN : Shri Gadgil Please be brief.

SHRI V. N. GADGIL (Pune) : Sir, I shall try to be brief. But, you will be a little indulgent because I have to substantiate as to why I have moved my amendment. I have moved my amendment to have an enquiry Commission for this reason. A number of institutions in the name of Gandhiji have now become a hotbed of politics, of political activities and of party activities. I shall mention one or two of them.

First of all, I would like to mention the name of Gandhi Peace Foundation... run by Shri Radhakrishna. I am sorry Mrs. Danavate is not here. But, I shall be quoting not from news magazine or any journal of my party but from the magazine

articles from the newspapers which have nothing to do with my Party, as to what is happening. Shri Radhakrishna's name appears in one of the magazines.

This Gandhi Peace Foundation is registered under the societies' Registration Act. The premises on which the Foundation is situated at 221/223, Deen Dayal Upadhyay Marg, was an outright gift from the Government of India including two bunglows. One of the conditions was that no other registered, unregistered or commercial institution or activity can be conducted from the premises. The whole object was that such activities as are conducive to Gandhian Philosophy could be carried on from the premises. Now, what happens ?

There are to-day a number of institutions —a long list is with me, I will not read the whole of it, but I will illustrate that.

There are institutions like :

1 Voluntary Action Cell,

2 Indian Council for Peace Research,

3 Consortium on Rural Technology (CORT),

4 Media Foundation,

5 Clearing House-cum-Information, Centre on Rural Development;

6 People's Union for Civil Liberties (PUCL);

7 Coordinating Committee for a Strengthening Democracy.

There are a number of registered and unregistered Societies.

MR. CHAIRMAN : Mr. Gadgil, it is better to name the organisation —not the individuals

SHRI V. N. GADGIL : I am not naming. I am only quoting from the newspapers. These Associations are registered or unregistered societies carrying on their activities in violation of the terms and conditions under which the land was gifted for this Foundation. I mentioned the name of one Shri Radhakrishna who is connected with a number of institutions...

MR. CHAIRMAN : You only mention the subject-matter. Why mention the name ?

SHRI V. N. GADGIL : I am only quoting from the newspapers.

MR. CHAIRMAN : Why mention the names ?

SHRI V. N. GADGIL : Because it referes to that particular person and I shall mention his name.

MR. CHAIRMAN : They are not here to defend themselves.

SHRI V. N. GADGIL : I understand you. I am quoting from the newspaper article. There is nothing defamatory. I am only asking for an enquiry committee. That is all. The whole purpose of my amendment is that when activities carried on by the institutions or associations are in the name of Gandhiji and if they are inconsistent with the Gandhian principle, these should be enquired into by Government.

Now, Sir, this gentlemen is connected with various institutions. I am prepared to give a list of 49 institutions twenty of whom receive foreign money. It is now part of the record in this House. For instance, I had asked a question about the number of foreign countries who are sending funds to various institutions. I shall immediately mention some of these institutions. Here is an association called 'AVARD' which has received from EZE Bonn Rs. 44,55,589 in 1979; from the Danida-Denmark Rs. 1,44,000 and again from EZE-BONN Rs. 15,63,215 and from Ford Foundation—Rs. 6,14,250. This is the kind of money awarded to various institutions. What is happening in Gandhi Peace Foundation. How it is used for political purposes ? One illustration is enough. The very first meeting to elect Shri Morarji Desai as the Prime Minister was held in this permises. It was not meant to be used for party purposes. That is how it started.

[Shri V. N. Gadgil]

There is another institution called Academy of Gandhian Studies. It has its office at Tirupati and Hyderabad. I would like the Government to enquire as to who is running this institution, who is financing this and who are the persons involved in this institution. Have they received any foreign money ?

Then again, activities are carried on by this institution which are not in the interest of the nation and in that sense against the philosophy of Mahatma Gandhi. A survey was carried on by the Government of India which says that there are 2 lakh bonded labour. This institution carried on a survey which says there are 24 lakh bonded labour. The whole thing is sent to West Germany for computer processing. Is this an activity for Gandhian purposes ? Is this activity to be carried on in the name of Gandhiji ?

There is Gandhi Samarak Nidhi. The basic principle of Gandhiji was truth and respect for law. He stood for the small man. Now, Gandhi Smarak Nidhi has invested funds in—Ltd. Guest Keen Williams Braithwaite Co., Hindustan Lever Ltd., Binny Ltd. Dunlop India Ltd., Siemens India Ltd. Larson and Toubro Co. etc. Ltd., Is this consistent with Gandhiji's philosophy to invest in monopoly' shouses ?

There is Gandhi Smarak Sangrahalaya about which Shri Bhiku Ram Jain has already made mention. What is going on in that institution. It is something against labour and something against the interests of the people. I would like only to give two-three examples from an Article in this journal—Ravivar—dated 8th February, 1981 which says :

"कुछ बातें तो साफ दिखाई देती हैं, जैसे प्रतिष्ठान के कर्मचारियों की सेवा शर्तें प्रतिष्ठान के भवन का विधि विरुद्ध इस्तेमाल, यहां सम्पन्न हुए कामों की गुणवत्ता, प्रतिष्ठान के साधनों का स्पष्ट दुरुपयोग इत्यादि। प्रतिष्ठान की कार्य पद्धति में अनियमितताओं और विधि उल्लंघनों की तो पूरी एक श्रृंखला है।)

Then again ?

उदाहरण के लिए एक संगठन एक होटल चलाता है जिसे यद्यपि हास्टल कहा जाता है लेकिन आधार व्यावसायिक है

Further it says :

हाल ही में प्रतिष्ठान ने दो व्यक्तियों से 25 हजार रुपये दान के रूप में प्राप्त किए। यह रकम वस्तुतः "सिटिजन्स फार डेमोक्रेसी" को दी जानी थी और उसे ही मिली लेकिन प्रतिष्ठान के रास्ते से, क्योंकि प्रतिष्ठान के दाताओं को प्रदत्त रकम पर आयकर की छूट मिलती है। क्या यही गांधी जी का रास्ता है ? गांधी शान्ति प्रतिष्ठान का होटल और कैन्टीन पिछले 16 वर्षों से चल रहे हैं। सालाना बिक्री है लगभग तीन लाख रुपये। लेकिन 1974 तक इसकी कोई भी आडिट शुदा रिपोर्ट नहीं पेश की गई थी

Further it says :

उदाहरण के लिए प्रतिष्ठान के काल व्यक्ति गांधी बुक हाउस का काम करते हैं। और उन्हें पैसा दिया जाता है दिल्ली तत्व प्रचार केन्द्र की ओर से

Then again :

बताया जाता है कि किसी विदेशी संस्थान से चार गाड़ियां तीन मेटाडोर और एक स्टेशन वैगन प्राप्त हुईं थीं लेकिन इन में से एक भी गाड़ी अब गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में नहीं है।

Then again it says :

एक बार तो यहां तक हुआ कि कर्मचारियों की यूनियन को रजिस्टर्ड होने से रोकने के लिए प्रतिष्ठान के लोगों द्वारा सम्बद्ध सरकारी अधिकारियों को घूस भी दी गई।

17.00 Hrs.

Bribe was given by persons connected with this institution. Then there is one more point which I wish to make and it is this. If all these things are going on, is it not a case for having a Commission of enquiry ? Then I will refer to one more point. Whether it is Jyotirmoy Bosu or Jyoti Bosu ? What happened was this. Jyotirmoy Bosu mede a reference in this House under Rule 377, Special Mention; that was in the year 1977. He said that the enquiry against AVARD was politically motivated. He said that they were innocent persons and they are not indulging in any wrongful activities and so on, that it was done out of revange by Mrs. Gandhi's Government and all that. That is what he said in 1977. But today I find this. I am quoting from Sarvodaya Press Service, Vol. II, Part 48, April, 16, 1981. Shri Manmohan Choudhuri, a former Sarva Seva Sangh President has said this :

> 'The agencies thus banned from working in the adivasi areas of West Bengal include the AVARD (The Association of Voluntary Agencies for Rural Development) and the Tagore Society for Rural Development.'

MR. CHAIRMAN : Please conclude.

SHRI V. N. GADGIL : I am concluding. Just one sentence. I therefore request the Home Minister to accept my Amendment and appoint a Commission of Enquiry to enquire into the working of all such Institutions. With these words I conclude.

श्री जयपाल सिंह कश्यप (आंवला) : माननीय सभापति जी, मुझे इस बात के कहने में कोई संकोच नहीं है कि महात्मा गांधी इस देश के करोड़ों लोगों के लिए एक आदर्श थे और इस शताब्दी में देश के लिए अगर उन्हें अणुशक्ति भी कहा जाय तो मैं समझता हूं कि कोई गलत नहीं है । लेकिन महात्मा गांधी को अगर कोई इस देश में अपमानित करने की कोशिश करता है तो वह नाकाबिले बर्दाश्त है । महात्मा गांधी की इज्जत के नाम पर किसी संस्था से राजनीतिक रंजिश निकालने के लिए अगर कोई भावना इस प्रस्ताव के पीछे छिपी हुई है तो उससे ज्यादा कोई निन्दनीय और गन्दी भावना नहीं है ।

यह महात्मा गांधी का देश है । इस देश में आदिवासियों के समूह पर चलती हुई गोलियां, हरिजनों की सामूहिक हत्या, मजदूरों पर चलती हुई गोलियां, कर्नाटक के किसानों पर चलती हुई गोलियां क्या यही महात्मा गांधी का आदर्श है ? महात्मा गांधी के देश में इससे ज्यादा गांधी का अपमान और कोई नहीं हो सकता ।

सभापति महोदय : आप रेज्यूलूशन के बाहर बोल रहे हैं ।

श्री जयपाल सिंह कश्यप : वह भी अपमान है । साइंस वर्ल्ड आया है । अगर चिन्हों से और इशारों से कहा जाता है तो वह वह भी गांधी जी का अपमान है ।

महात्मा गांधी को अगर मान देना है तो इस की सोचना चाहिए । मैं तो यहां तक कहता हूं कि महात्मा गांधी के नाम को आपने जिन गांधी आश्रमों के बोर्डों पर लगा रखा है, उन आश्रमों की हालत भी देखिए। वहां पर नकली कपड़े बिकते हैं, उनी कपड़ों में सूती कपड़ा मिलाकर बेचा जाता है । तेल और शहद में भी मिलावट होती है । यह सब चीजें भी गांधी जी का अपमान है, उनके नाम का अपमान है । अगर कहीं महात्मा गांधी की मूर्ति अपमानित की जाए, कहीं डा. अम्बेडकर, पेरियार रामास्वामी नायकर और महात्मा बुद्ध की मूर्ति अपमानित की जाए तो उस को भी इसमें जोड़ा जाना चाहिए । सारे महापुरुषों को एक ही इज्जत और प्रतिष्ठा से रखा जाना चाहिए । इस देश में महात्मा गांधी के फर्ज के नाम पर लोगों को धोखा देने की कोशिश की जाए तो उसको भी मिटाना चाहिए । महात्मा गांधी महान थे और जितने और लोग महान थे, उनको अपमानित करने का अगर कोई प्रयास किया जाता है तो वह राष्ट्र का अपमान है हर व्यक्ति का अपमान है । सारे राष्ट्र के महापुरुषों को मानव सम्मान मिले, ऐसा होना चाहिए । इस रेज्युलूशन के पीछे कोई दुर्भावना न हो । श्री जयप्रकाश नारायण भी इस देश के उन क्रांतिकारियों में रहे हैं, जिनको आज भी देश के करोड़ों लोग इज्जत देते हैं । अगर उस भावना को दुर्भावना में लाने की कोई कोशिश की जाती है तो इस आदर्श का विरोध ही नहीं निन्दा भी हम करेंगे ।

श्री तारिक अनवर (कटिहार) : चेयरमैन साहब, आज भारत ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया इस बात को कबूल करती है कि गांधी जी ने जो अहिंसा का रास्ता दिखाया, उसी रास्ते पर चल कर लोगों के लिए कुछ किया जा सकता है। श्री तैयब हुसैन ने जो रेज्यूलूशन रखा है, उसका मकसद यह है कि ऐसी किताबों या तस्वीरों की इजाजत नहीं होनी चाहिए, जिनसे गांधी जी की प्रतिष्ठा गिरे या उनके आदर्शों पर धब्बा लगे। यह रेज्यूलूशन बहुत महत्वपूर्ण है। हमने महात्मा गांधी को बापू के नाम से जाना है। यह सही है कि हम उनकी पीढ़ी के नहीं हैं। हम उस पीढ़ी से आते हैं, जिसने महात्मा गांधी को किताबों और इतिहास के पन्नों से जाना है। लेकिन हमें उनके आदर्शों और उनके बताए हुए रास्ते पर विश्वास है। **(व्यवधान)**

अभी हमारे विरोधी पक्ष के साथियों ने गांधी जी के प्रति सम्मान प्रकट किया है, लेकिन वे अपने भाषणों में हर बात में 'लेकिन' और 'परन्तु' का शब्द इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि उनकी भावना साफ नहीं है। उन्होंने कहा कि हम लोग---कांग्रेस के लोग --गांधी जी की इज्जत नहीं कर रहे हैं। उन्होंने श्री जयप्रकाश नारायण की भी चर्चा की, मगर उन्होंने जयप्रकाश बाबू को क्या प्रतिष्ठा दी, इसको हमने और सारे देश ने देखा है। विरोधी दलों और जनता पार्टी के लोग चिल्ला चिल्ला कर श्री जयप्रकाश नारायण का नाम लेते हैं, लेकिन •उन्होंने श्री जयप्रकाश नारायण को क्या प्रतिष्ठा दी है, यह हमने और देश ने तीन सालों में देखा है। जब वे जयप्रकाश बाबू का नाम लेते हैं, तो हमें शर्म आती है। जहां तक हमारा ताल्लुक है, हम पहले भी जयप्रकाश बाबू की इज्जत करते थे और आज भी करते हैं।

अगर महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों के बारे में कोई अनुचित बातें कही या लिखी जाती हैं, तो उनपर बंदिश लगनी चाहिए, क्योंकि गांधी जी एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनको हमने महात्मा माना है। अगर उनके विरोध में कोई बातें होती हैं, तो वे राष्ट्र के हित में नहीं हैं।

श्री कमला मिश्र मधुकर (मोतीहारी) : सभापति महोदय, भारत की आजादी के संघर्ष में महात्मा गांधी की जो भूमिका रही है, राष्ट्र की आजादी को लाने में उन्होंने जो योगदान किया है, यहां तक कि आजादी के संघर्ष को मासेज तक उन्होंने पहुंचाया, मासेज को मोबिलाइज किया, उसमें उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही है और अछूतोद्धार में। राष्ट्रीय एकता में, हिन्दू मुस्लिम एकता में जो उन की भूमिका रही है वह सर्वमान्य है, उसमें कोई विवाद की बात नहीं है। हम गांधीवाद को नहीं मानते हैं, हमारा दृष्टिकोण दूसरा है। लेकिन जो उन की इतिहास में भूमिका है उस से तो इनकार करने की बात नहीं हो सकती है।

माननीय सदस्य जो प्रस्ताव लाए हैं उस प्रस्ताव से उनकी मंशा पूरी नहीं हो रही है। मंशा यह होनी चाहिए कि गांधी जी के नाम पर बहुत सारी संस्थाएं जैसे गांधी स्मृति या गांधी पीस फाउन्डेशन आदि चल रही हैं उन की गतिविधियों को देखा जाए, ये सारी संस्थाएं अमेरिकन एजेंसी का काम कर रही हैं, सी. आइ. ए. का काम कर रही हैं और सरकार की नाक के नीचे यह हो रहा है। कहावत है कि चिराग तले अंधेरा। वही बात हो रही है। आप यहां यह प्रस्ताव ला रहे हैं और होम मिनिस्टर साहब यहां नहीं हैं, क्या उन को मालूम नहीं है कि इन संस्थाओं के जरिए कितने राष्ट्रद्रोही कार्य हो रहे हैं और आप के सामने हो रहे हैं, आप की आवाज नहीं उठती है। प्रस्ताव से क्या होने वाला है? आप प्रस्ताव क्या लाए हैं? प्रस्ताव यह लाए हैं कि गांधी जी की तस्वीर को, उन की इमेज को बिगाड़ने वाले को काग्निजबल आफेंस के अंदर लाया जाए। लेकिन यह कौन ला रहा है? सही माने में कहा जाए तो गांधी जी की सारी तस्वीर को बिगाड़ने में उन्होंने ज्यादा भूमिका अदा की है। उन्होंने गांधी जी का नाम लिया है। हमारे यहां क्या परम्परा रही है? परम्परा यह रही है

कि हम राम का नाम जपते हैं, दिन भर, महादेव का नाम जपते हैं दिन भर, कृष्ण का नाम जपते हैं दिन भर और ठीक उनके बताए गए आदर्शों के उलटा चलते हैं। असल में कहा जाय तो गांधी टोपी पहन कर और गांधी जी का नाम ले कर आप गांधी जी के नाम को, उनके सिद्धांतों को और उन के जीवन दर्शन को आचरण में नहीं ला रहे हैं और आचरण में नहीं लाने से क्या हो रहा है कि गांधी टोपी से और गांधी दर्शन से आज नौजवानों को घृणा है, वह कहते हैं कि गांधी दर्शन कोई वैज्ञानिक सत्य नहीं है। उसमें कोई ऐसा सत्य नहीं है जो विज्ञान सम्मत हो। . . . (व्यवधान) . . . गांधी जी के दर्शन को जीवन में उतारने का प्रयास आपसे भी नहीं होता होगा और किसी से नहीं होता है। . . . (व्यवधान) वही मैं अर्ज करने वाला हूं। आज गांधी पीस फाउंडेशन एक कलंक है देश के सामने गांधी जी के जीवन को, उन की तस्वीर को एक समग्र रूप में रखना चाहिए। इतिहास में उन की क्या भूमिका रही है यह बात आनी चाहिए।

उन्होंने आत्मकथा को कोट किया है। आत्मकथा में उन्होंने कबूल किया है कि मैं ने मांस खाया है, आत्मकथा में उन्होंने कबूल किया है कि मैं ने सिग्रेट पिया है, और भी बहुत कुछ कबूल किया है। लेकिन यह प्रयास किया जाय कि आत्मकथा में जो ऐसी बातें कही गई हैं उन्हीं को उभाड़ कर रखा जाए और समग्र रूप उस को न दिया जाए, इस बात का मैं भी विरोध करता हूं, मैं आप के साथ हूं इस बात में। लेकिन फिर हृदय टटोलिए आप कि गांधी जी का दर्शन क्या है और आप का व्यवहार क्या है ?

एक किताब निकली है आचार्य रजनीश के द्वारा, आप जानते होंगे, उसमें क्या लिखा है? उस में लिखा है कि बुद्ध से और गांधी से मैं बड़ा हूं।। उस को नौजवान पढ़ते हैं, क्यों नहीं उस को बन्द करते हैं ?

अन्त में मैं कहना चाहता हूं कि उपाय क्या है ? उपाय यह है कि आप के जीवन में, समाज के जीवन में अगर गांधी जी का दर्शन सही हो, हालांकि हम लोगों को उस पर मतभेद है, हम नहीं मानते हैं उसको, फिर भी उस को जीवन में तो उतारिए। वह नहीं कर रहे हैं। उस को जीवन में उतारने का प्रयास तो कीजिए, वह नहीं कर रहे हैं। तो फिर गांधी जी का नाम रटने से, उन की माला जपने से कुछ नहीं हो सकता है। आप अगर गांधी जी की माला जपते हैं और सही माने में गांधी जी के जीवन दर्शन को आचरण में नहीं उतारते हैं तो कुछ भी होने वाला नहीं है। इसलिए जरूरी है कि सब से पहले रूलिंग पार्टी की ओर से गांधी जी के दर्शन और उन की इमेज को बिगाड़ने के काम को कम किया जाय। यदि अत्याचार रहेगा, हिन्दू, मुस्लिम रायट होता रहता, हरिजनों पर अत्याचार होता रहेगा और फिर भी कहा जायगा कि हम गांधी जी को मानते हैं तो यह गांधी जी की इमेज को और बुरा करता है। इसलिए प्रस्ताव में जो कानिजेबल आफेंस की बात है उस को मैं नहीं मानता हूं। उनकी मंशा को मैं सही समझता हूं कि ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए।

श्री हरीश चन्द्र सिंह रावत (अलमोड़ा) : सभापति महोदय, तैयब जी ने जो संकल्प इस सदन के समक्ष-प्रस्तुत किया है उसका मैं समर्थन करता हूं। इस संकल्प का जो उद्देश्य है उसको हमारे विरोधी मित्रों ने गलत रूप में समझने की कोशिश की है। एक पवित्र उद्देश्य को लेकर, कुछ गलतियों की तरफ इस संकल्प के द्वारा सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया है ताकि उन भूलों को दुरुस्त किया जा सके और सरकार तत्परता के साथ इस सम्बन्ध में कदम उठा सके। इसी उद्देश्य से हमारे मित्र तैयब जी इस संकल्प को यहां पर लाए हैं लेकिन हमारे विरोधी दोस्तों ने कुछ ऐसी मंशा जाहिर की है मानो इसके पीछे कोई राज-नीतिक उद्देश्य छिपा हो। जय प्रकाश जी का नाम इस सन्दर्भ में आया है। हम जय प्रकाश जी की विचारधारा से सहमत नहीं हो सकते लेकिन आज वे स्वर्गवासी हैं, जो उनमें अच्छाइयां थीं, जो त्याग-तपस्या उन के साथ जुड़ी हुई थी उसको सम्मान देने के लिए सरकार ने एक प्रतिष्ठान की स्थापना की, जिसकी चेयरमैन स्वयं प्रधान मंत्री जी

[श्री हरी चन्द्र सिंह रावत]

है । यह इस बात का द्योतक है कि भले ही उनकी राजनीतिक विचारधारा को हमारे पार्टी और सरकार न मानती हो लेकिन उन में जो अच्छाइयां थीं, उनकी जो त्याग-तपस्या थी उसको सरकार सही सन्दर्भ में देखना चाहती है । लेकिन दूसरी तरफ बार बार उनका नाम लेने वालों ने हमेशा उन के नाम को कलुषित करने की कोशिश की है और उनके सपनों को चकनाचूर किया है। इसी प्रकार से गांधी जी के नाम के साथ जो लोग ज्यादती कर रहे है उसको रोकने के लिए हमारे साथी तैयब हुसेन जी ने यह संकल्प यहां प्रस्तुत किया है जिसका मैं परा समर्थन करता हूं ।

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) मान्यवर, यह प्रस्ताव बहुत अच्छा है, मैं इसका समर्थन करता हूं लेकिन जो इस प्रस्ताव की मूल भावना है उससे क्या शासक दल के लोग अपने को सचमुच में सम्बद्ध रख पाए हैं--इसमें मुझे सन्देह है । गांधी जी से शासक दल के लोगों का क्या सम्बन्ध है--यह मैं इन शब्दों में व्यक्त करना चाहता हूं कि केवल राजनीतिक लाभ उठाने के लिए गांधी जी के नाम का प्रयोग किया जाता है । एक प्रकार से गांधी जी का नाम शासक दल के लिए राजनीतिक भोजन बन गया है । इस प्रकार की शासक दल की जो वर्तमान स्थिति है उसकी मैं कड़े शब्दों में निन्दा करता हूं । यह स्थिति क्यों है, इस सम्बन्ध में भी मैं कुछ कहना चाहता हूं । जब आपातकाल की घोषणा की गई थी तब महात्मा गांधी के नाम से सम्बध जितने भी संगठन हैं, सभी ने उसका विरोध किया था क्योंकि वह एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था थी । उसके बाद लगातार इस बात की कोशिश की गई कि उन संस्थानों को अधिक से अधिक नुकसान पहुंचाया जाय । उन की जो मांगें थीं उन को पूरा न करना, उनके ऊपर कीचड़ उछालना, इस तरह की तमाम बातें उस समय चल रही थीं । आज भी मौजूदा सरकार की कोई भी सहानुभूति उन संगठनों के साथ नहीं रह गई है ।

मान्यवर, एक फिल्म बन रही है, उस में भी पता चला है कि गांधी जी के जीवन से सम्बन्धित कुछ ऐसी बातें रखने की कोशिश हो रही है जिस से गांधी जी के जीवन पर कीचड़ उछाला जा सके । अगर इस तरह की कोई भी हरकत होती है तो उस की जिम्मेदारी पूरे तरीके से मौजूदा शासन के ऊपर होगी । इस लिए मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वे उस को देखें और उस फिल्म के अन्दर अगर कोई भी ऐसी बात हो जिस से गांधी जी का जीवन कलुषित और कलंकित होता है । तो उस को रोकें क्योंकि उस से हमारे राष्ट्र का जीवन कलुषित और कलंकित होता है। जब तक कमजोर वर्गों पर अत्याचार होते रहेंगे, जब तक एक-एक सूबे में साठ-साठ आदिवासी मारे जाते रहेंगे, जब तक बीस-बीस हरिजन गोलियों से उड़ाये जाते रहेंगे तब तक गांधी जी का नाम लेने का अधिकार इन लोगों को नहीं है । लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं . . . (व्यवधान) क्योंकि आप का शासन है, आप को ध्यान रखना चाहिए कि इस तरह की हरकतें न होने पायें । गांधी जी की प्रतिमायें जब तोड़ी जाती है, तो उस के लिए यह शासन जिम्मेदार है । क्यों ऐसी बातें होती हैं? इस लिए मैं चाहूंगा कि इस बात के लिए निन्दा की जाए । इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

श्री राम सिंह यादव (अलवर) : सभापति महोदय, जो मौजूदा प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, मैं व्यक्तिगत रूप से एक बात कहना चाहता हूं । महात्मा गांधी जी सन 1947 के दौरान में चौधरी तैयब हुसैन के गांव में आये थे और मुझे यह भी मालूम है, चूंकि मेरा चुनाव क्षेत्र चौधरी तैयब हुसैन के क्षेत्र के बिलकुल समीप रहा है, कि इन के क्षेत्र में ज्यादातार उसी कौम के लोग रहते हैं जिस कौम से चौधरी तैयब हुसैन ताल्लुक रखते हैं । चौधरी तैयब हुसैन "मेव" मुसलमान जाति के हैं । हिन्दुस्तान के बटवारे के वक्त एक बहुत बड़ा सवाल पैदा हुआ था--मेव जाति के लोग उस वक्त के पंजाब और राजस्थान के बीच में रहते थे, उन्होंने उस वक्त यह फैसला किया था कि हम लोग पाकिस्तान जा कर आबाद होंगे । लेकिन वहां पर महात्मा गांधी जी ने आकर सत्याग्रह किया--यह उस क्षेत्र का जिक्र है

जो बलवर और गुड़गांवां के बीच का क्षेत्र है —इन के पिता चौधरी यासीन खां ने महात्मा गांधी के साथ इस बात का वायदा किया कि जितने भी मेव भाई हैं वे सब हिन्दुस्तान के अन्दर रहेंगे और हिन्दुस्तान के ही नागरिक रहेंगे तथा हिन्दुस्तान के अन्दर उन को भी वही अधिकार मिलेंगे जिन की कि वे पाकिस्तान के अन्दर उम्मीद करते हैं। यही कारण है कि महात्मा गांधी और चौधरी तैयब हुसैन के पिता चौधरी यासीन खां के यत्नों से वे मेव लोग वहीं पर आबाद रहे और इस वक्त भी बहुत खुशी के साथ, हिन्दुओं के साथ मिल कर रहते हैं ।

जहां तक महात्मा गांधी के दर्शन, उनकी संस्कृति और उन की फिलास्फी का सम्बन्ध है, इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, यदि आज के इस युग को गांधी-युग कहा जाए । गांधी जी एक साधारण मानव ही नहीं, बल्कि एक महान युगपुरुष थे और उन्होंने इस राष्ट्र के अन्दर अंग्रेजों के जमाने में जो हमारे अन्दर सांस्कृतिक कमजोरी, नैतिक कमजोरी और दूसरी कमजोरियां जो आ गई थीं, उन सब दुर्बलताओं को दूर कर के समाज में एक शक्ति पैदा की, एक फिलास्फी समाज को दी । आप यह भी जानते हैं कि कोई कितना भी बड़ा समाज क्यों न हो, उस समाज के अन्दर यदि शक्ति कहीं से प्राप्त हो सकती है । तो फिलास्फी से हो सकती है । जिस समाज के अंदर जिस राष्ट्र के अन्दर और जिस काम के अन्दर कोई फिलास्फी नहीं है, तो वह राष्ट्र कभी भी तरक्की नहीं कर सकता हो । यही कारण है कि वही राष्ट्र अंग्रेजों के टाइम में महात्मा गांधी से पहले भी हिन्दुस्तान था, लेकिन उन्होंने एक फिलास्फी दी और एक दर्शन दिया और उसी दर्शन के कारण उन्होंने एक नई जिन्दगी इस कौम को दी ।

मैं कहना चाहता हूं कि जो फिलास्फी और दर्शन हमको महात्मा गांधी जी ने दिया है, उस फिलास्फी को हमको कायम रखना है और यदि वह फिलास्फी कायम रहेगी तो किसी भी बड़ी से बड़ी ताकत का हम मुकाबला कर सकते हैं, चाहे वह बौद्धिक ताकत हो, चाहे वह आर्म्स की ताकत हो और किसी भी तरह की ताकत हो यदि वह फिलास्फी और दर्शन हमारे पास से लुप्त हो जाएगा, तो हम उस ताकत को भी खो देंगे। इसलिए जरूरी है, जो गांधी वांगमय है, गांधी संस्कृति है, गांधी अभिव्यक्ति है, गांधी दर्शन है और गांधी सिद्धान्त है, उस सिद्धान्त को हम अक्षुण रखेंगे । मैंने इसलीए एक संशोधन पेश किया है कि गांधी जी का दर्शन, गांधी विचारधारा और गांधी के सिद्धान्तों को क्षण रखने के लिए हमें इस तरह का प्रावधान करना चाहिए कि इस राष्ट्र के अन्दर इस प्रकार की किसी की हिम्मत, न हो सके ।

मैं आपको खास तौर से अमृतसर के बारे में, जो कि 17 मई, 1980 को पेट्रियट में खबर छपी है, कहना चाहता हूं :

> "A bronze statue of Mahatma Gandhi installed in the Rambagh garden here, was found disfigured by some miscreants this morning.
>
> The stick (danda) depicted to be held by Mahatma Gandhi in his hand had been broken. Dung and mud had been plastered on other parts of the statue of the Father of the Nation."

इस तरह की जो साम्प्रदायिक बात है या जो किसी भी नाम पर राष्ट्रपिता को कलंकित करना चाहते हैं, उन की मूर्ति का खण्डित करना चाहते हैं--इस राष्ट्र को ऐसी चीजों को किसी भी कीमत पर बरदाश्त नहीं करना चाहिए । इसलिए मैं माननीय गृह मंत्री जी से निवेदन करता हूं कि वे इस के सम्बन्ध में कोई उचित कदम उठायें, कोई ऐसा कानून इस सदन के सामने लायें जिस से महात्मा गांधी जी के साहित्य, उन के वाणमय, उन के विचारों को अक्षुण रखा जा सके ।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं

श्री गिरधारी लाल डोगरा (जम्मू): चेयरमैन साहब, मैं इस रेज्युलूशन और जो तरमीम मैंने पेश की है, दोनों के हक में बोलना चाहता हूं । जिन लोगों ने गांधी की हत्या की, उन को शहीद किया, उनकी फिलास्फी का भी वे ही लोग आज फायदा

[श्री गिरधारी लाल डोगरा]

उठाना चाहते हैं । उन की फिलास्फी को आगे बढ़ाने के लिए उस वक्त जो संस्थायें बनाई गई थीं उन संस्थाओं में उन लोगों ने अपनी पोजीशन मजबूत कर ली है और आज गांधी जी के नाम पर वे गलत फायदा उठा रहे हैं । उन के जीवन-चरित्र को गलत ढंग से पेश किया जा रहा है । इस बारे में गाडगिल साहब ने बहुत सी बातें डिटेल में आप के सामने रखी हैं और यह बतलाया है कि गवर्नमेन्ट के लिए लाजमी हो जाता है कि पार्लियामेंट के एक्ट के जरिये एक लाइब्रेरी बनाई जाए, उन के लिए मेमोरियल बनाया जाय । उस वक्त तमाम लोगों ने मिल कर गांधी स्मारक निधि को बनाया था, उस को जमीन दी गई थी, उस के जरिये गांधी पीस फाउण्डेशन बनाया क्या, वहां पर बड़े बड़े एअर कण्डिशन्ड हाल बनाये गये, उस के बाद क्या हो रहा है--विदेशों से रुपया जमा किया जा रहा है, यह सब कुछ हो रहा है लेकिन वह पैसा कैसे खर्च होता है उस का हिसाब किसी को पता न हो और अगर पता लगाने की कोशिश की जाय तो उस की मुखालिफत हो --यह बात समझ में नहीं आती है ।

मेरे एक दोस्त अमरीका गये थे--उन को वहां पर बतलाया गया कि इस तरह का प्रचार वहां पर हुआ कि हिन्दुस्तान के गांव-गांव में लोग भूखे मर रहे हैं । स्कूली बच्चों से चन्दा इकट्ठा किया गया और वह पैसा इन्हीं संस्थाओं के पास भेजा गया । यहां आ कर उस पैसे का क्या इस्तेमाल हुआ किसी को पता नहीं है यह क्या बेबसी है? सरकार को इस बारे में पूरी तहकीकात करनी चाहिए कि जो गांधी जी के नाम की टारनिश करते हैं, उन के नाम पर पैसा जमा करते हैं वह पैसा कहां जाता है, कैसे उस का इस्तेमाल होता है और जो लोग इस के लिए मुजरिम पाए जांय उन को सजा दी जाय ।

न सिर्फ महात्मा गांधी, बल्कि हिन्दुस्तान के रहने वाले किसी भी व्यक्ति की इमेज को खराब नहीं करना चाहिए--मैं इस बात को मानता हूं । लेकिन फादर-आफ-दि-नेशन को तो हमें सैक्रेटली ट्रीट करना होगा । मेरी समझ में नहीं आता है कि हमारे अपोजीशन के साथी इस की मुखालिफत क्यों कर रहे हैं--इस में ऐसी कोई बात नहीं है ।

इन अलफाज के साथ मैं इस रेजोल्यूशन की ताईद करता हूं और दरख्वास्त करता हूं कि मैंने जो तरमीम पेश की है उस के साथ इस को मन्जूर किया जाय ।

SHRI RATANSINH RAJDA (Bombay South) : Not only the people of this country but the people of the entire world are indebted to Mahatma Gandhi, the Father of the Nation. It was Einstein who had told about Gandhi that:—

> "Generations to come will scarce believe that such a one as this in flesh and blood to walked on this earth."

Fortunately, today is the birthday of Rabindra Nath Tagore, another great soul. Gurudev said about Mahatma Gandhi :—

> "Here is at last the living truth."

In these words, he gave the greatest tribute to Mahatma Gandhi.

It was the Father of the Nation who taught us to stand erect against the British Empire, who created a sense of self-respect amongst us. He gave us the battle field, the battle cry and battle dress and made us march in the freedom struggle under his leadership. Whenever something is said about Mahatma Gandhi in this country, the innermost recesses of our hearts are touched. We would like to see that the dignity and honour of Mahatma Gandhi, the Father of the Nation, must be honoured and protected at all costs. From that viewpoint, this Resolution is commendable and I would commend the Resolution.

But when I heard the speeches here, I was doubtful whether that is the only objective behind moving this Resolution. Some people attacked the Gandhian institutions. If there is something wrong some Gandhian institutions, as Shri Gadgil stated, naturally, an enquiry should be held. If in some Gandhi institutions some wrong things are committed, we should see to it that they are discouraged, they are stopped forthwith. As far as that is concerned, I am with you. But, at the sametime, I would like to caution you, and caution my friends on this side, that if we are trying to introduce politics in

these Gandhian institutions because those institutions during the days of emergency fought.....

(*Interruptions*) आप मेहरबानी कर के मत बोलिए, आप चुप बैठिए।

There are certain elements in this country which did not like what these institutions did during the emergency, because those institutions fought for the ideals of Mahatma Gandhi, and Mahatma Gandhi had taught us निर्भय बनो, (Be fearless) you have banned even the slogans and speeches of Mahatma Gandhi. And now you are preaching about these. Kindly, do not preach for Mahatma Gandhi. Do not try to become a Messiah, preaching the teachings of Mahatma Gandhi. Remember, the speeches of Mahatma Gandhi were not allowed on the radio during the emergency. Why don't you put your hands on your heart and decide what you have done ?

So, let us be humble enough when we talk of Mahatma Gandhi. If there are some wrongs committed by some institutions, let us try to remove them.

आचार्य भगवान देव : आप बिल्कुल गलत-बयानी कर रहे हैं।

श्री रतनसिंह राजदा : आपके कहने से गलत-बयानी नहीं होगी। आपने क्या किया है वह हमको मालूम है।

Sir, you will have to put this man in order. He cannot interrupt me like this. This is not the way to function in this House.

Shri Stephen tried to bring in politics and from that viewpoint some speeches were made. A reference was made to some magazines also. If there are some institutions in the name of Mahatma Gandhi, where some wrong things or irregularities are committed, I say that they should be dealt with according to law, enquiries should be carried on according to law but, at the same time, our motive should not be political. While criticising these institutions, we should see that we purify them; our aim should be to purify them, not to introduce our own politics, I would like to caution our friends here on this aspect.

I am saying this because, while speaking on this Resolution, there was an attempt to malign these institutions, which are adding wonderful work, very highly constructive work, in Adivasi areas, in harijan areas and other areas. They are doing very good work, productive work in the field of khadi and village industries. While these Gandhian institutions are doing very good work, sometimes it may happen somewhere some vested interests may creep in and try to tarnish the name and image of Mahatma Gandhi. As far as that is concerned, we should not allow that to happen.

I would appeal to my hon. friends here that when we talk about Mahatma Gandhi, we must all talk unanimously. If anybody wants or tries to tarnish the image of Mahatma Gandhi or wants to desecrate his statues etc. in this country, we must fight it tooth and nail, not only by law but also by creating public opinion among the masses so that nobody would dare to break or desecrate his status or malign his name.

From that point of view, I would like to commend this Resolution. But I would definitely say that mere law would not do. We shall have to organise the people, the conscience of the people so that they may stand for the principles of Mahatma Gandhi. If we do that, I think that will serve the purpose.

श्री गिरधारी लाल व्यास (भीलवाड़ा) : सभापति महोदय, यहां पर जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, उसका मैं समर्थन करता हूं।

इस संबंध में मेरा निवेदन है कि गांधी समृति भवन पर जो लिटरेचर बिकता है, उसके संबंध में तैयब साहब ने जो जिक्र किया है, इस प्रकार का लिटरेचर अगर बिकता है तो निश्चित रूप से इसको जब्त कराया जाए, इनके खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए।

दूसरा मेरा निवेदन है कि गांधी पीस फाउंडेशन ऐसी संस्था है, जिसके बारे में अभी एक कम्युनिस्ट सदस्य ने कहा कि यह संस्था सी० आई० ए० की एजेंसी के रूप में काम करती है और फोर्ड फाउंडेशन जो कि अमेरिका में है, उससे धन प्राप्त करके इस देश को बदनाम करने की कोशिश कर रही है। इसके संबंध में निश्चिता तारीके से जांच की जानी चाहिए कि इसकी क्या एक्टीविटीज है और यह किस तरीके से काम करती है। अगर इसकी एक्टीविटीज एंटी नेशनल है। तब निश्चिता तौर पर इसके खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए।

जनता पार्टी के समय एक काम हुआ कि जनता पार्टी ने सब को भय-मुक्त कर दिया, निर्भय कर दिया। गुण्डे,

[श्री गिरधारी लाल व्यास]

बदमाश, स्मगलर्स, हर्डर्स, ब्लैक-मार्केटियर्स सब को निर्भय कर दिया और इस प्रकार के लोगों द्वारा इन संस्थाओं में प्रवेश करके इन संस्थाओं को ज्यादा से ज्यादा बदनाम करने की कार्यवाही की गई । इस तरह के जो लोग इन संस्थाओं में प्रवेश कर गए हैं, इनके खिलाफ अवश्य कार्यवाही की जानी चाहिए और ऐसे लोग जो एंटी नेशनल एक्टीविटीज में भाग लेते हैं और देश को बदनाम करने की कार्यवाही करते हैं, ऐसे लोगों की इन संस्थाओं से निकाला जाना चाहिए और इनके स्थान पर ऐसे लोगों को लाया जाना चाहिए जो गांधी जी के नाम को उज्जवल करें ऐसे लोगों को लाना चाहिए जो मजदूरों, किसानों, गरीब आदमियों, पीड़ितों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और गरीब तबके के लोगों की सेवा करें ।

आज ये संस्थाएं पालिटिक्स प्ले करती हैं, पालिटिक्स का अड्डा बन गई हैं। 1977-78 के चुनाव में हमने देखा है। कांग्रेस विरोधी लोगों द्वारा धन दिया गया और सर्वोदय के नाम पर प्रचार किया गया। इनका कहना था कि हम तो वोटर्स को एजूकेट करने का काम करते हैं, लेकिन उनकी एजूकेशन कांग्रेस के खिलाफ रही और राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन संस्थाओं का उपयोग होने लगा । इसलिए मेरा निवेदन है कि इन संस्थाओं की जांच होनी चाहिए और दोषी लोगों को इसमें से निकाला जाना चाहिए ।

आज चाहे गांधी स्मारक निधि हो, चाहे गांधी पीस फाउंडेशन हो, चाहे गांधी स्मृति भवन हो या इसी प्रकार की अन्य संस्थाएं हों, ये सारी की सारी संस्थाएं और संगठन आज इसी काम में लगे हैं, इसलिए जब तक इनके खिलाफ पूरे तरीके से कार्यवाही नहीं करेंगे, तब तक संस्थाओं के लोग पालिटिकल एक्टीविटीज में हिस्सा लेते रहेंगे और जिन उद्देश्यों के लिए इन संस्थाओं का निर्माण किया गया है, उन उद्देश्यों को पूरा नहीं किया जा सकता।

अभी राजदा साहब कह रहे थे कि ये पालिटिकल बेंडेटा से कार्यवाही करना चाहते हैं, यह कार्यवाही नहीं करनी चाहिए। मैं तो कहता हूं कि हम इन संस्थाओं से पीड़ित हैं । ये ऐसी संस्थाएं हैं जो बराबर राज्य से पैसा लेती हैं और राज्य के खिलाफ ही काम करती हैं। इस प्रकार की संस्थाएं अगर वोटर्स को एजूकेट करके सही रास्ते पर लाने का काम करती हैं, गरीब लोगों को उपर उठाने काम करती हैं, ऐसे काम करती हैं जिससे देश ऊंचा उठता है, इनके द्वारा स्थापित स्माल स्केल इंडस्ट्रीज में लोगों को रोजगार-धंधा मिलता है तो निश्चित रूप से इनके कार्य स्वागत योग्य हैं। लेकिन ये उल्टे काम करते हैं। लाखों करोड़ों रुपया इनको मिलता है। उसका नाजायज फायदा उठा कर अपने आपको ये शक्तिशाली और मजबूत बनाने में लगे हुए हैं। श्री तैयब हुसैन ने जो प्रस्ताव रखा है और श्री गाडगिल ने जो एमेंडमेंट दिया है, उनका समर्थन करता हूं और निवेदन करना चाहता हूं कि एक कमिशन मुकर्रर करवा कर जितने भी सर्वोदय संस्थान हैं, गांधी स्मारक निधि है, गांधी पीस फाउंडेशन आदि हैं उन सब की जांच कराई जाए और उनकी जो आपत्तिजनक गतिविधियां हैं उन पर पाबन्दी लगाई जाए।

MR. CHAIRMAN : Many Members want to speak on this Resolution. I have tried to accommodate them with in the time limit but many Members are still left. They want to participate in this Resolution. Do you want that the time be extended.

SEVERAL HON. MEMBERS : Yes.

MR. CHAIRMAN: Should it be by one hour.

SEVERAL HON. MEMBERS : Yes.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : सभापति जी मेरी बात सुनिये । यही करना है तो अपोजीशन को कह दीजिये कि चले जाएं मुझे अपने प्रस्ताव को इंट्रोड्यूस करने का मौका तो दे दें । लास्ट टाइम भी ऐसा हुआ था ।

MR. CHAIRMAN : There is no provision here.

SHRI SAIFUDDIN CHOUDHURY : (Katwa): Late Shri Ramavatar Shastri move the Resolution.

MR. CHAIRMAN : Now the session is going to be adjourned.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : There is no provision like that.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : What to do? You can see the difference. Now the House is adjourning. Shri Sunder Singh.

श्री रामादतार शास्त्री : मेरी बात तो सुनिए । चेयर से पिछली बार वाजपेयी जी को कहा गया था आपका नहीं होगा तो अगली बार ले लेंगे । इतना तो आप भी करिये । उनका रेजोल्यूशन स्टेट्स के वाइफरकेशन के बारे में था । डिप्टी स्पीकर ने यह कहा था । मेरे रेजोल्यूशन को आप किल तो न करें । आप हमारा कोओप्रेशन चाहते हैं लेकिन ऐसे तो वह नहीं मिल सकता है ।

सभापति महोदय : कोई प्रोविजन नहीं है ।

श्री रामावतार शास्त्री : उनके वास्ते कैसे प्राविजन हो गया था ? आपके यहां से उस कुर्सी से उनको एलाउ किया गया था । बारह साल से मैं यहां हूं और पहली बार मेरा रेजोल्यूशन आ रहा है और उसको भी निल किया जा रहा है । एक बार चेयर से ऐसा फैसला दिया जा सकता है तो मेरे केस में भी ऐसा आप कर सकते हैं । मुझे आप मौका दे सकते हैं और मैं नेक्स्ट टाइम इस पर बोल सकता हूं ।

सभापति महोदय : श्री सुन्दर सिंह, आप बोलिये ।

श्री रामावतार शास्त्री : मुझे मूव कर लेने दीजिए और नैक्स्ट सैशन में यह चला जाएगा । मुझे कोई एतराज नहीं है । मूव कर लेने दीजिए ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी (फिल्लौर) : सभापति महोदय, महात्मा गांधी फ़ादर आफ़ दी नेशन थे । उनके बरखिलाफ़ अगर कोई बात करता है तो इसका साफ़ मतलब यह है कि वह नेशनल नहीं है । इस रिजोल्यूशन पर बोलते हुए जिन ख्यालात का इजहार किया गया उनको सुन कर जो हरिजन हैं उनको बहुत तकलीफ़ हुई होगी । मैं इस रिजोल्यूशन के लाने पर माननीय सदस्य को मुबारकबाद देता हूं कि उन्होंने हमको मौका दिया इस अहम मसले पर बहस करने का । मैं समझता हूं कि जो भी पार्टी महात्मा गांधी की नीति के बरखिलाफ़ बात करे उस पार्टी में नेशनेलिटी नाम की चीज नहीं है । अगर मोहम्मद साहब, ईसामसीह के खिलाफ़ कोई गलत बात करे तो तूफ़ान खड़ा हो जाता है । लेकिन जब कि गांधी जी के खिलाफ़ बात हो रही है तो किसी को गुस्सा नहीं आ रहा है । गांधी जी हमारी आंखों के सितारे थे, उनकी एक शख्सियत थी, उन्होंने गरीबों की मदद की और तमाम दुनिया को इकट्ठा कर के हिन्दुस्तान को आजाद कराया । अब उनके बरखिलाफ़ आवाज उठायी है । जो उनकी बेइज्जती करते हैं मेरी तो मांग है कि ऐसे लोगों और पार्टी के खिलाफ़ कार्यवाही करनी चाहिये । लेकिन जब ऐसी कार्यवाही करने में आप हमारा साथ नहीं दे रहे हैं तो हम कैसे मानें कि आप नशनल हैं, आपमें नैशनैलिटी है । ऐसी जो भी संस्थायें हों, जो महात्मा गांधी के पवित्र नाम का मिसयूज करती हैं उनके खिलाफ कार्यवाही में हर माननीय सदस्य को साथ देना चाहिये । मैं समझता हूं आप में नेशनैलिटी नहीं है । महात्मा गांधी ने क्या कहा था :

"I do not want to be born. But if I have to be born again I should be born as an untouchable so that I may share their sorrows and sufferings inflicted upon them. I therefore, pray that if I have to do so, I should not do it as a Brahmin or Kshatriya or Vaish or Shudra but as an anti-Shudra."

SHRI SUDHIR GIRI : On a point of Order Sir. (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Under what rule?

SHRI SUDHIR GIRI : You please listen to me(*Interruptions*) The Business Advisory Committee had fixd 2 hours for this Resolution. Have you extended the time with the permission of the House ? You hav not taken the permission of the House.

MR. CHAIRMAN : I have taken the sense of the House. You see the records (*Interruptions*) I put it to the House and took the consensus of the House.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS AND DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI P. VENKATASUBBAIAH): Mr. Chairman, I would like to make it very clear that it is not the intention of the Government to prevent Mr. Shastri from moving the resolution.

The request was made by several Members to extend the time and if the Rules permit we have no objection.

SHRI SAMAR MUKHERJEE : Unless he intervenes it lapses. Let the other things go on. It has been done in the House. Earlier it has been done.

MR. CHAIRMAN: Under which rule?

SHRI SAMAR MUKHERJEE: No question of rules.

MR. CHAIRAMN : Mr. Sunder Singh, you should conclude now.

श्री सुन्दर सिंह : इनमें करैक्टर नहीं है। अगर करैक्टर हो तो यह रैज्यूलूशन को पास करें। ये कहते हैं कि कांग्रेस (आई) वाले महात्मा गांधी के उसूलों पर नहीं चलते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या आप चलते हैं? आप भी नहीं चलते हैं। आपको कोई सुनता नहीं है। अगर आप इस रैज्यूलूशन का हमारे साथ मिलकर साथ दें आपके करैक्टर का पता लग जायेगा, अगर बरखिलाफ बोलेंगे तो यह आपके खिलाफ जायेगा। मैं चाहता हूं कि आप इस रैज्यूलूशन को यूनैनिमसली पास करें। जितना नुकसान महात्मा गांधी के मरने के बाद उनके उसूलों को तोड़ने के बाद हरिजनों का हुआ है, उतना और किसी का नहीं हुआ है। हमें दुःख है कि हमारी कोई सुनने वाला नहीं है। अगर आज महात्मा गांधी होते तो हमारी यह हालत न होती।

इन शब्दों के साथ मैं इतना शुक्रिया अदा करता हूं जो इस रैज्यूलूशन को लाये हैं। मैं श्री तैयब हुसैन को ताइद करता हूं और उनका शुक्रिया अदा करता हूं।

श्री रीतलाल प्रसाद वर्मा (कोडरमा) : सभापति महोदय, महात्मा गांधी की छवि बिगाड़ने का जो संकल्प है, यह देखने में तो बहुत अच्छा लगता है, (व्यवधान)

इस संकल्प को लाने वाले जो हमारे माननीय सदस्य श्री तैयब हुसैन जी है, अगर उनकी मनसा वाचा कर्मणा की तरह भावना रही होती तो अच्छी बात थी, लेकिन पिछले 34 वर्षों का इतिहास अगर देखा जाये तो महात्मा गांधी की छवि को कितना सुन्दर रखा गया है?

आज सब लोग बोलते है महात्मा गांधी, महात्मा गांधी। महात्मा गांधी बोलते थे, रघुपति राघव राजा राम और उनकी भावना थी पतित पावन सीता राम। लेकिन आज गांव गांव में जो लोग बोलते है कि रघुपति राघव राजा राम, पांचो अंडा एक हो शाम। इस तरह की लोग बातें करते हैं।

गांधी जी के चरित्र, उनके साहित्य और उनके जितने भी आदर्श हैं, उन्हें हमें मानना चाहिये, चाहे हम किसी भी दल के हों। महात्मा गांधी और जयप्रकाश नारायण इस 20वीं शताब्दी की अप्रतिम प्रतिभा और अप्रतिम महापुरुष हैं जिन्होंने कभी कोई गद्दी नहीं ली और किसी तरह का कोई मोह नहीं किया। उन्होंने कभी कामना नहीं की किसी दुराग्रह की या कुर्सी के लिये कभी इच्छा प्रकट नहीं की।

ऐसे महात्माओं के प्रति किसी को घृणा हो उनके प्रति अविश्वास हो तो इससे बड़ा अपराध और कोई नहीं हो सकता। कांग्रेस (आई) के माननीय सदस्य बहुत जोरों से कह रहे हैं कि महात्मा गांधी की छवि को बिगाड़ने से रोकने के लिए कानून बनाना चाहिए। मगर कानून से किसी की छवि नहीं बन सकती है। कानून के अनुसार मर्डर करना एक भंयकर अपराध है और उसके लिए सजा दी जाती है, लेकिन फिर भी मर्डर होते हैं। आत्म-शुद्धि और वास्तविक श्रद्धा की भावना रखने से महात्मा गांधी की छवि को बनाए रखा जा सकता है।

गांधी स्मृति और गांधी शांति प्रतिष्ठान ने जो कुछ किया है, वह किसी पार्टी या दल के लिए नहीं किया है। अगर उन्होंने श्री जयप्रकाश नारायण और सर्वोदय की मदद की है, तो आप जनता के जागरण के लिए और लोकतंत्र को अक्षुण्ण रखने के लिए की है, न कि किसी दल के लिए अगर ये संस्थाएं रात-दिन इन्दिरा जी और संजय गांधी की जय करें और उनकी प्रशंसा करें, तो आप कहेंगे कि ठीक है। लेकिन अगर वे पूरे देश की आम जनता को जगाने का प्रयास करती है, तो आप कहते हैं कि वे ख़राब है। तो इन संस्थाओं का राट्रीय्यकरण कर लीजिए।

गांधीजी के आदर्श, चरित्र और वाङ्मय और लोकनायक जयप्रकाश नारायण दोनों पैरालल हैं। उन दोनों ने राष्ट्र की जो सेवा की है, उसके लिए उनका नाम शताब्दियों तक अक्षुण्ण और अमर रहेगा और उनपर कोई छींटा-कशी नहीं कर सकता है। अगर इन संस्थाओं में ग़लत चरित्र के आदमी हैं, तो उनको आम जनता के सामने लाना चाहिए इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि कलंकित और दूषित चरित्र वाले लोगों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए। लेकिन इसकी आड़ में अगर कोई राजनैतिक शिकार करना चाहे, तो उसको उचित नहीं कहा जा सकता है। अगर ये सोचते हैं कि सब संस्थाओं पर हमारा कब्जा है, मगर एक दो संस्थाओं पर नहीं है, इस लिए उनपर नियंत्रण करने का प्रयास किया जाए, तो यह राजनैतिक दुराग्रह से प्रेरित दृष्टिकोण है।

महात्मा गांधी और लोकनायक जयप्रकाश नारायण, इन दोनों का चरित्र अप्रतिम है—किसी से उनकी तुलना नहीं की जा सकती है और उनमें कोई भेद नहीं है। इस लिए मैं कहूंगा कि अगर महात्मा गांधी और लोकनायक की छवि को अच्छा बनाना है, तो राष्ट्र के हित के लिए जो काम हुआ है, उसको आगे बढ़ाना चाहिए। आज प्रगति मैदान में सन आफ़ इंडिया की प्रदर्शनी महीनों से लगी हुई है, लेकिन सरकार ने महात्मा गांधी के बारे में कोई प्रदर्शनी नहीं लगाई है। सरकार इन्दिरा जी के सम्बन्ध में एक महीने से प्रदर्शनी लगा रही है, लेकिन यह नहीं हुआ कि वह महात्मा गांधी के चरित्र और विचारधारा के बारे में कोई प्रदर्शनी लगाए। अगर कथनी और करनी में यह अन्तर रहेगा, हाथी के दांत दिखाने के और, और खाने के और, अगर इस तरह की मैनटेलिटी रही, तो हम महात्मा गांधी को आदर नहीं दे सकते हैं। इस लिए अंतः करण को शुद्ध करने और राष्ट्रीय चरित्र को ऊंचा उठाने का प्रयास किया जाए।

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : सभापति महोदय, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के द्वारा गत चुनाव में महात्मा गांधी

[आचार्य भगवान देव]

की छवि को बिगाड़ने का प्रयास किया गया। सर्वोदय के नाम पर भी काबे में कुफ्र किया गया। और कम्युनिस्ट भाइयों के द्वारा तो आजकल ऐसे चित्र भी निकाले जा रहे हैं; जिनमें गांधी जी के हाथ में साम्यवाद का झंडा भी दिया गया है, भगत सिंह के हाथ में साम्यवाद का झंडा दिया गया है।

चूंकि चर्चा का समय कम है, इस लिए मैं एक पायंट को आपके सामने पेश करना चाहता हूं। गांधी जी को हत्या करने वाले लोगों ने जब यह बात कह दी कि हम अब गांधीवाद में विश्वास रखते हैं, तो इससे हम समझ सकते हैं कि गांधीजी के साथ विश्वासघात करने वाले, धोखेबाज व्यक्ति गांधीजी को किस लाइन पर ले जाना चाहते हैं और उसके पीछे क्या षड्यंत्र है। जो लोग और एस० एस० में थे, वे रंग बदल कर जनसंघी बने, जनसंघ से वे भारतीय जनता पार्टी में गए और उसके बाद चौथा रंग बदला। जब भारतीय जनता पार्टी बना कर उन्होंने उन अधिवेशनों में गांधीवाद की बात करी, तो इससे यह पता लगा कि इस देश में बहुत बड़े गद्दार एक बहुत बड़ा षड्यंत्र कर रहे हैं गांधीजी के साथ।

जो लोग आज गांधीवाद की बात करते हैं, उन्होंने गांधीजी की हत्या कराने में सहयोग किया। भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने यहां दिल्ली में और बाहर जनता पार्टी के नाम से वोट लिए, और जनता को बिना पूछे नई पार्टी बना कर, अपने सिद्धान्त ताक पर रख कर, दुनिया के सामने कुछ और रखने का प्रयास किया। शराब वही थी, रंग बदल दिया बोतल का। अन्दर जहर था, उस जहर को अमृत का रूप देकर गांधीवाद का चोंगा पहन कर ..

18.00 hrs.

MR. CHAIRMAN : Now it is 6 O'clock You can continue next time.

18.01 hrs.

MOTION OF NO-CONFIDENCE IN THE COUNCIL OF MINISTERS—*contd.*

MR. CHAIRMAN: Now we resume the discussion on the No-confidence motion. Mr. Samar Mukherjee was on his legs. Yes, you may continue.

SHRI SAMAR MUKHERJEE (Howrah): I was discussing the reply of our Finance Minister who expressed hopes that the economy was slowly recovering. My point is that this is an illusion the Government is creating which is totally different from the reality. The reality is that our country is passing through an unprecedented crisis. And this crisis is not only limited to the economic sphere but it has spread to the social sphere and also into the sphere of politics and the very fabric of our democracy and the parliamentary system.

He expressed that there will be stability in prices and he has given figures today that inflation has shown signs of decline. I have got figures. This is the chart of the consumer price index. Here the trend is increasing. 1981 January—411—base is 1970—100. February 1981—418 and March—420. So, whichever calculation our Finance Minister is doing on the basis of the wholesale price index and is coming with a picture that we are now out of the danger, that is not the reality. The additional increase from March to April I do not have. But it is on the increase, and the process has not been checked. The figure for 1978-79 with 100 as base for 1960 is 331·41. For 1979-80 it is 359·75. That means an increase of 8·46%. 1980-81—400·83. It is an increase of 11·42%. So this is the trend in prices.

If you see the Sixth Five Year Plan—the main document has been very recently circulated—it has dealt with the question of mobilising resources. It states categorically that the possibility of mobilising resources by increasing direct taxation has reached the limit. So, no taxation on the bigger income groups. That means the process is more concessions to the monopolists and bigger houses and encouragement to the private capital. So many concessions have been announced. To